जूना जींवता चितराम

लेखक
मुरलीधर व्यास
मोहनलाल पुरोहित

प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

प्रथम बार

मूल्य – ३ रु. ७५ पैसे
सन् १९६०

मुद्रक
अजन्ता प्रिन्टर्स
जयपुर

थांरी वस्तु भेट, थांनै है वल्लभ-प्रभु ।
है तो आ अळसेट, लाज ताहरै विड़द री ॥

—लेखक

विषय सूची

ओळ-खाण

इसी देखणें मैं आवै है के मिनख जूनी बातां नैं सुणन-गुणन मैं मोकळो रस लेवै है। चौ, लारली बातां नैं घणैं उछाव-अर-उमंग सूं सुणैं, तोलै-मोलै, जाचै-परखै अर हुणैं री नवी बातां सूं मिलाण करै। भणिया-अण भणिया सगळै इणी मारग बै वै।

इतिहास, काण्यां-किस्सा अर लोक-साहित नैं, पढ़ण-सुणन री चाव घण खरो-इणीज कारण सूं हुवै।

इणी चाव नै पूरो करण सारू, म्हां भी 'जूना जीवता जागता चितराम' लिखिया है। इणां रै पढ़ण सूं मोकळी नवी चिमतकारी और हितरी-बातां आपरै जाणनै मैं आसी-अर-आसी-आपरै आंख्यां रै अगाडी समाज रै जूनै धंवेज-बंधाण रो सोवणो चितराम।

इण छोटी सी पोथी सूं आपनै इत्ती जाणकारी तो मिळ सी ईज—

(१) श्रम री पूजा
(२) आप आपरी जागा सगळां री माण-काण
(३) भाई चारै, मेळ अर संयोग री भावना
(४) आप-आपरै धंधै मैं सगळै चतर
(५) गुणां री कदर
(६) त्याग, विसवास, अर भगती री भावना
(७) जाति रै भेदभाव नै भूल'र सागळे घुळिया-रसिया-बसिया
(८) जूनी रीत रवाज
(९) भांत-भांत रा धंधा भांत-भांत रा मिनख

आ पोथी आप लोगां रै घणी दाय आवणी जोयीजै, इसी म्हांरी धारणा है। आपरी दाय-अर सरावण सूं ईज म्हारो हाथ बधसी।

बीकानेर
राखी पूनम, संवत् २०१७

मु. ध. व्यास
मो. ला. पुरोहित

प्रकाशकीय

"जूनां जींवता चितराम" राजस्थान के लोक-जीवन के कुछ प्राचीन लेकिन ज्वलंत सहज संस्मरणात्मक रेखा चित्र हैं जिनमें राजस्थान के समाज, संस्कृति, तथा आंचलिक जीवन के अनेक पृष्ठ मुखरित हुए हैं। अचल की धरती की धड़कन के वास्तविक बोल अंचल की भाषा में ही अपनी सफल अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं, प्रस्तुत रेखा-चित्र इसके प्रमाण हैं।

सरल और प्रांजल भाषा चित्रित राजस्थानी जीवन के यह अनेक पात्र मानव जीवन की अनेक विशिष्टताओं के प्रतीक हैं। साथ ही पुस्तक के इन चितेरे लेखकों की भी सृजन सामर्थ्य का परिचय देते हैं।

राजस्थानी भाषा में रचित श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन की योजना के अंतर्गत साहित्य अकादमी के राजस्थानी विभाग ने "जूना जीवता चितराम" को प्रकाशित करने का निर्णय लिया था। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन विभाग के उसी निर्णय की क्रियान्विति है।

मात्र पद्य में ही नहीं, गद्य के क्षेत्र में भी राजस्थानी साहित्य सिद्धि के नये क्षितिज छू रहा है। गद्य की अनेक विधाओं में आज नितनई श्रेष्ठ कृतियां प्रकाश में आती जा रही हैं, और उसी परम्परा में, राजस्थानी के पाठकों के लिये प्रस्तुत है यह 'जूनां जींवता चितराम'।

शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'
कार्यवाहक निदेशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर (राजस्थान)

भोळो घड़ा नाखणियो

मरू भोम। करड़ी रुत। तानी-ताती बेकळूरा धोरा। उनाळे में तपै तौ इसौ तपै कै मत पूछौ बात। इयां सूं चिप'र बैंवती हवा खीरा उछाळै। ऊपर सूं सूरज भगवान लाय बरसावै नीचै जमीं माता इसी तपै-इसी तपै कै उभराणै वैवां तौ फाला उपड़ जावै।

असवाड़ा-पसवाड़ा सैन तपै। आंगण तपै, भीत्यां तपै, वासण तपै, बिछाणा तपै अर तपै पैरण रा गाभा। रोही में गूंगा-भोला जिनावर तपै। तपतै रै मारिया आकळ-बाकळ हुयोडा छैंया तकै तिसां मरता तड़भड़ीजै। अठीनै-उठीनै पाणी री वगां डभका मारै।

मरू-भोम में एक तौ पाणी री इयां ई तोड़ो फेर उनाळे में तौ मत पूछौ बात। कूवा साठीका ऊंडा पाणी वळधां सूं काढ़ीजै। कूवै माथै इत्ती भीड़ कै माथै सूं माथा टकरावै अर घडां सूं घडा। पाणी ले जायणा खातर सै ऊंतावळा। बारी मोरीजियोनी कै फफाफफ पाणी ढोईजण लागोनी। पखालिया न्यारा ई राफड़ घालै। जंगी-जबर तिरिया-मिरिया भरियोडा कोठा देखतै-देखतै खाली हुय जावै। वौ देखै हूं पैला तौ वो देखै हूं, तूं चाल हूं आयो।

कदेई जोर री लूवां चालै। कदेई घम घमीजै। परसीणै रा परणाळा वैवै। मिट-मिट छेड़ै तिस लागै।

काळै ऊनाळे में पाणी बिना घडी एक सरै नहीं। खांधै उखण'र लावै तोई वीपरवारवाळां रै सरै नहीं। लाई काम काजियां नै तौ वेळा-वखत ई लाधै नहीं। टाबर ढोय-ढोय'र कित्तौ क ढोवै। जणै घड़ा नाखणियां अर पखालियां रै मूंडा सामो जोवणौ पड़ै।

पखालियां रा सुर चढियोड़ा। पैला तौ वतलायां आरै ई नहीं करै अर निवाजै तो बोलता ई पाधरा आठाना-बाराना पखाल मांगै। वाका फाड़ै।

कदेई इसी वडावडी वाजै जिको हिडक्यां रै हाथ लगायां ई रुपियो पचास हाथ नहीं आवै।

जणै घड़ा नाखणियां री वण आवै। खुल्ला घड़ा नखावै तौ आडै दिन दो टका तौ अंवळी वेळा एकानी। नवी वंधी पैली तौ करण नै आरै ई को होवैनी जे हांकारो भरै तौ नखरा-चखरां सूं। जूनी वंधीवाळां रै ई जोश्रीजतो पाणी नाखदेवै तौ वडी बात।

पण पांचै आंगळयां एक सिरखी को होवैनी। कोई-कोई घडावाळा भला ई होवै। वानै माण-मुलायजो मारै। पल्लै धरम राखै। पइसा देवता कई नै फोड़ो घालै नहीं-तरसावै नहीं।

भोळो इसोई एक घड़ा नाखणियो हो।

भोळो म्हांरी गळी अर चौक रै घरां मैं बरसां सूं पाणी नाखतो हो। कदेई फोड़ा को घालतो हो नी। आपरै मतै ई माटा-मटक्यां अर कंड्या भरी राखतो। मिठ बोलो माण-मुलायजेवाळो अर खरो हो।

वंधी मैं रुपियै रा ३२ घड़ा नाखतो। खुल्ला घड़ा रुण माफक पण बीजा सं थोड़ा सस्ता।

भोळो भोळो अर भलो मिनख हो।

भणियोड़ो भोळो आखर ई को होनी। घडो नांखतो जणै पणीडै अथवा आंगण री भींत माथै कोयलै सूं एक लीख मांड देवतो। इण तरै जित्ता घड़ा दिन भर मैं नाखतो उत्ती ई लीख्यां मांड देवतो। महीनै मैं हिसाब होंवतो। लीख्यां गिणीज'र ३२ रै भाव सूं दाम फळाईज जांवता। बो कदेई हिसाब मैं गोळ घालतो को होनी। कदेई खोटी लीख्यां को काढ़तो होनी।

भोळो खरो हिंसाबियो हो।

बारै महीना मैं भोळै नै वंधीवाळां घरां सूं एक-एक धोती जोड़ी मिळती। अर मिळती जीमण-जूठण होंवती जणै जीमण री नैतो।

भोर री टंडी वेळा भोळो घडा नाखणा सरू करतो जिकै री १०॥-११ तांई इकधारो वैवनी। पछै माळा-मिणियो फेर'र पेट पूजा करतो।

दुपारै रो आराम करतौ। पाछो तीजै पौर ३-४॥ बजी घड़ौ लेयर कूवै पूग जांवतौ। सिंज्या री ८-८॥ बजी तांई एकढ़ाण बैंवतौ।

भोळो मेनती हो।

बधीयाळा कदेई पइसा देवण में मौड़ी कर देवतो, तांई बो चींचा को करतौ होनी। बिना कयै ई ताजै पाणी री मटक्यां-चाडा छाण देवतो। बासी ठंडे पाणी री मटकी न्यारी भर'र मेल देवतो।

भोळो जीरणावाळो हो।

बरसां सूं घर में आवण-जावण सूं भोळो परायो को लखाईजतौ हो नी। सगळां सूं पूरो हिळमिळग्यो हो।

लुगायां बासण-कूसण मांजती अर सिनान-संपाडो करती वेला गैणो खोल'र भूल जांवती, तो भोळो, हेलो मार'र कैय देवतो-माजी! ओ गैणो कै रो है, संभाळ लो।

भोळो मेळू अर हाथ रो साचो हो।

भोळै री ठिगणी सामण हो, बडी आंख्यां, गोरो सरीर, करड-कावरा केस, छोटी मूछयां, कानटिरियोडा जिकां में मुरक्यां पेरियोड़ी, टाट पडियोड़ी, डील ऊपर बंडी, खांधै अंगोछो गोडा सांईनो ऊंचो-ऊंचो धोतियो अर उभराणै पगां रैंवतो।

आज बां बातां नैं मोकळा बरस हुयग्या। भोळो परलोक सिधारग्यो, पण बैरो भोळो उणियारो अर खराई-भलाई री छाप हिंवडै में हाल मंडी पड़ी है।

हुसेनौ गूजर

हुसेनौ भांभर कै रौ ४-४॥ बजी उठतौ। दिसा-फरागत सूं निमट'र, गायां नै चाटौ चटाय'र, दूवण लागतौ। दस-बारै गायां ही, सै खरणै-वाळी अर लंबै थणां वाळी। दोय ही भूरी भैसां। दूध रा, चरा रा चरा भरीज जांवता।

पछै वजू करण लागतौ। सूरज भगवान रै उदै होवण सूं पैलाई वौ नमाज पढ़लेतौ। पछै थोड़ी देर तांई तसबी लेय'र अल्ला-अल्ला करतौ। घर में लोबान खेतौ।

दिन चढियां परचूणिया अर थोक दूध लेवणिया आय ढुकता। कंदोयां रै नित रौ दूध जोयीजै, सेरावंधी। वे ई आय धमकता। पाड़ोसी ई भेळा हुय जांवता। दूध रौ भाव निकळतौ। पछै हुसेन रै घरवाळा कंदोयां अर थोक दूध लेवणियां रै घरै चरा भर'र दूध पूगांवता।

हुसेनौ गूजर हौ।

हुसेनै री, घर री लुगायां ई बैगी उठती। हुसेनै नै दूवारी में मदत देंवती। घर री वासी फूस बारी करती। गायां नै नीरती ठाण साफ करती अर फोटा थापती। काई लागती घम्मड़-घम्मड़ आटौ पीसण।

घर में संप हौ। सगळे एक डोरे मै बंधियोडा हा। बडां-बूढ़ां री हुग्या में चाळणिया हा। हुसेनौ अर उण री वहू घर मै बडा हा।

हुसेनौ घर रौ मुखियौ हौ।

घर सूं दोय कोस छेड़ै एक वडौ तलाव हौ—वड़सीसर। जिठै रोहीं में, चरण लायक चूंन्दा अर तलाव में पाणी रैंवतौ हुसेनै री गायां-भैस्यां ई उठै दाणी में रैंवती। परवार रा दोय-तीन जणां नै उठै रैंवणौ पड़तौ। दिनूगै रा

वैगो दूयोड़ै दूध रा भरियोड़ा चरा, ढांचां ऊपर मेल'र, गधां ऊपर ढोय'र, सैर में वेचण सारू लावणा पड़ता। हुसेनै रै ३-४ गधा ई हा। गायां, भैंस्यां अर गधां-इण तरै मोकळा जिनावर हा।

हुसेनो चांपैवाळो हो।

हुसेनो तीन बखत री नमाज पढ़तो। रोजा राखतो। खैरात देंवतो। चौथाई तो को काढ़तो हांनी पण गरीब-गुरबां री मदत करतो। सभाव रो भलो, दयावान अर चित्त रो ओलोदोलो हो। जिनावरां नै खूब सोरा राखतो हो। आप अर वहू मक्कै-मदीनै सरीफ री जातरा कर आया हा।

हुसेनो हाजी हो।

एक तो मेळू बीजो भलो, तीजो डंभक अर चौथो धरमातमा होवण सूं, जात-बिरादरी में वैरी चोखो माण-काण हो वैरी वहू ई वैरै ओड़ै जोड़ै ही। जात-बिरादरी में, असरचौपड़ जांवतो जणै आंवता सगळे हुसेनै नै तेड़ी। हुसेनो, आपरी भली अर तीखी सूझ-बूझ सं, अळंजो सुळभाय देंवतो।

हुसेनो पंच हो।

जिनावरां री दूवारी दिन में दोय वार हांवती ही। एक भोर री वैगी टैम अर बीजी तीजै पोर री कोई ४-४॥ बजी। रात री १० बजी तांई हुसेनो गायकां री वाट जोंवतो। पछै बंचियोड़ै दूध रो मावो बणाय नांखतो। मावो बीजै दिन कंदोई अर जीमण-जूठणवाला खुसी-खुसी' ले जांवता परा। केई नकद पइसा देय जांवता तो केई ओधार-धाट। हुसेनो आवणियां नै राजी कर'र सबदो पटाय ई लेंवतो। आ बात काहीनी कै, वो, माल डूबती आसाम्यां नै सोल देवै। वै बरस साठां नैड़ा लिया हा अर केस तावड़ै में धोळा को किया हा नी। मिनख री आंख अर चाल ढाल देख'र वैरा लक्खण ओ लख लेंवतो हो।

हुसेनो दानो-सैणो वौपारी हो।

बामणां अर वाणियां रै सावै मावै दूध अर मावै री मोकळी खपत हांवती। मिंदरा में ई दूध जांवतो। गूजर किसा बीजा को हानी, पण लोक

हुसेनै सूं ईज घणा धीजता-पतीजता। बीजा, खोटौ माल ई चलाय देंवता। पण हुसेनौ इयां कदेई को करतौ हौ नी। बीजा तोल मैं ई मारण री चेस्टा करता पण हाजी वाबौ कूड-कपट को वापरतौ हौ नी। कदास हुसेनै रै दूध सूं, काम नहीं चलतौ तौ लोक उणरी ई मारफत बीजां गूजरां सं लेवता। जिण सं वे तोल-मोल मैं ठगावै नहीं।

हुसेनौ खातरी ग्ररईमानवाळौ हौ।

एक बात बीजी ई ही। कोई उणनै ग्राय'र लाचारी सूं कैंवतौ-हुसेना बाबा! छोरै-छोरी रौ ब्यांव है, पइससड़ा खनै थोड़ा ई है, दूध-मावौ तौ थांनै देवणौ ई पड़सी। कंई पइसा देय देसूं कंई ग्रोधार राखणी पड़सी। जणै बाबौ धीरज-ढाढस बंधाय'र कैंवतौ-थारै जोईजै जित्तौ दूध मावौ ले जायीजे। पइसा हौळै-सुरतै देय दियै। देख भाई! म्हारा पग मती तोडाये धरम पल्लै राखे। खरी नीयतवाळै, नै कांई माल री कमी है, भोळा!

हुसेनौ पर उपगारी हौ।

मितरा मेळै, ग्रौसर, वारियै, सिराध-छमछरी माथै हुसेनै री चोखौ माल बिकतौ। हुसेनौ बीजां गूजरां रौ दूध-मावौ लेय'र ग्रापरी मारफत बेच देंवतौ। सेठ-साहूकारां मैं वैरी ग्राछी धीज-पतीज ही। इयां तौ वैरौ ई, गाडौ घणौ सोरौ गुड़कतौ रैंवतौ हौ। कदेई ग्रोधार ग्रटक जांवतौ ग्रर थोक घास-फूस, नीरौ-चारौ, गवार ग्रर धान ग्रोण लेवणौ पड़तौ जणै पइसां री जरूरत पड़ती उण मौकै माथै वौ सेठां-साहूकारां नै जाचतौ। हुसेनै री इमानदारी, मेळ ग्रर भलाई सं, कोई ना करणी तौ ग्राधौरयौ, होठ रै फुरकारै सागै जोईजती जिती रकम तोल देंवतौ। उण री वौपार ई चोखौ चलतौ हौ।

हुसेनौ ग्राछी साख-सोभावाळौ हौ।

हुसेनै री ठिगणौ खामणौ हौ, वडी-वडी ग्रांख्यां, जाडा भंवारा, रेजी रौ चोळौ ग्रर रेजी री जाडी धोतियौ गोडां साईंनौ, ग्रध पक्का केस, मूछ्यां नाक नीचै घणी ग्रोछी ग्रर होठां रै किनारै तीखी, दाढ़ी च्यार-

च्यार आंगळ री, हाथ में डांग, गळे में रंगदार अंगूछो, माथै पागड़ी गट्टी फैंटी अर पगां में देसी जाडा जूत हा।

हुसेनो दसकत कर देवण जित्तौ ई भणियोड़ो हो। मोकळी चौपार करतौ, कई खनै चौपनियै में अटकवाग लेवतौ। सिमरती ई वैरी पक्की ही। सगळी धाल जाणै जीभ ऊपर मंडी रैवती। कणेई पूछलो, हुसेनो भड़ाक मूंडै हिसाब चताय देवतो। वै रै हिसाब में कदेई गोळ पड़नी को होनी।

हुसेनो हिसाबियो हो।

कैवत है-अठै जोयीजै जिकोई उठै जोयीजै। अबै वैनै बूढापै आय घेरियो ई। आंख्यां री सोजी घणी ओछी पड़गी। खाली भाली पड़ती, अबैतो अडवी-असरचो होवण सूं लांथो झाल'र हुसेनो घर सूं बार निकळतो। सरीर री सगती घणी ओछी पड़गी। सारो दिन घर-गुवाड़ में बैठो रैवतो। माचै माथै बैठो अल्ला-अल्ला करतो रैवतो। छोरा सेवा करता। घर में हालई वैरी कयी होवती ही। घर-कुटंब अर लेण-देण में ई घणी सोरो हो।

छेकड़ अल्ला री दरगा री तेड़ो आयो। पछै खळखळी तगादो आयो। अबै हुसेनोजी ई चालया; च्यार जणा री चौकड़ी माथै, आपरी खसबो खिंडाय'र।

बरस बीतग्या पण जस को बीतियौनी। वैरी गुणांरी खसबो सूं हाल लोक मोयीजियोड़ा है। मौकै-टांके तो हाजी हुसेनै री घाटो अखरै ई नहीं-घणी अखरै। पण जोर क्या चटै जद भगवान जिलम-मरण री जोड़ी-रच दियी।

— ३ —

सुखो वारीदार

सुखै बावै रो रंग सांवळो, आख्यां बडी, बडी मूछ्यां, चवडी धोळी दाढ़ी, धोळा-फरड़ा केस, चेरै माथै करडाई अर अणभो, आंख्या रे नीचै लंबी रेखावां, फरडी चामड़ी अर गंठीजियोड़ो सरीर हाथ लक्कड़-भांत अर छुरियै दाई, जाडा भंवारा, काठो गोडा साइनो धोतियो, डील खाखडियै दाई, सिग दाई गरजना करतो, कूवै माथै बैठो रैंवतो अर सगळी वातां री निगराणी राखतो। उंथर साठां नैड़ी पण कडक इसी जिकी गोटियांरां नै छेड़ै बैठावै।

वो कूवै माथै रोळ-राड करणियां जिकर करणियां, फालतू पाणी ढोळणियां, नागाई-नकटाई करणियां नै, इसी धाकल देंवतो जिको वांरो काळजो गिरै छोड देंवतो। आगे सूं फेर कुचमाद करण री हीमत को होंवती नी।

सुखो बावो कूवै रो वारीदार हो।

कूवा साठी का-घणा ऊंडा। धणखरा पोकरणां बामणां रा।

पाणी बळधां सूं काढ़ीजै। वारो, भायसै री वरत मूं कूवै में ढेरीजै अर पाछो बळधां सूं खांचीजै। वारो, कूवै रै मूंडै माथै पूगै जणै वारो मोरणियो जोर मूं रागोलिया करै-आयो रे भैरियो आयो। सुण'र खीली काढ़णियो, वरत री खीली काढ़ै। हमें तो वरत रीस भरियोड़ी सरपणी दाई, सरडाटै मूं कूवै पासी दौड़ै। वारो मोरणियो पग में पैरियोडै खेटर मूं वरत नै कूवै म्हनै पूगतेई दवाय लेवै। वलध बैनै उठै मूं पाछी म्हांच'र मारण रै नाकै पूगै।

खीली काढ़णियो अर वारामोरणियो, दिन भर में चोखा पइसा कमाय लेवै।

कूवै माथै म्हाल रा डोल अर डोल्यां पड़ी रैंवती जिण मूं कोई पाणी पीवो अर हाथ-मंडा धोवो।

भैंस री खाल रा टुकड़ा-सळू कोठै मैं भीजता रैंवता। चिलमियां सारू एक खानी छाणा, धुखता रैंवता।

सुखलो बाबौ जूनों अर जाणीकार हौ।

कूवै रै पसवाड़ळी डावी-जीवणी कूंड्यां घड़ा भरणवाळां वास्ता भरी रैंवती। कूंड्यां रै एड़ै छेड़ै दोय जबर चंवरा ऊंडा कोठा तिरियां-मिरियां, पखालियां सारू भरिया रैंवता।

सुखलो बाबौ घड़ै अर मटकी रौ कच्चौ पइसौ अर पखाल रौ एकानौ भराई लेंवतो। लोग लोभ मैं आय'र बेघड़िया लांवता अर पिणयार मटकी माथै, दूणियौ-गूणियौ अथवा चाडौ भर'र मेलती, जणै बाबौ कैंवतौ-क्यों धरम पल्लै राखोनी रे। खाली लोभ रै मारिया मारां मरो, कूंडी तो ढोवण सूं रया।

बाबौ सगळां सूं नगदी पइसा हाथो-हाथ लेंवतो। कई री ओधार करतौ तौ ठावै-ठावै री। गोळ घालणियां अर गिचळ्यां खावणियां री दाळ बाबै आगै गळती का हीनी।

सुखलो बाबौ डाठीक अर हैंसाबियौ हौ।

गायां-ढांढां सारू चवडी ऊंडी कूंड्या भरी रैंवती। पंखेरुवां सारू कूंडा-ठीकरां मैं पाणी भरियौ रैंवतौ। गरीब-गुरबां नैं बाबौ मुफत मैं पाणी ले जांवण देंवतो।

कूवै माथै कई नै न्हावण-धोवण री मनाई का हीनी। भलां ई निमट'र जांवती वेळा बालटी-गूणियौ भर ले जावौ।

सुखलो बाबौ धरमातमा हो।

छीड़ होंवती जणै तो बाबौ घरे रोटी खाय आंवतो अर भीड़ होंवती जणै उठै ई मंगाय लेंवतो।

कणै ई काम रै मारियां फेट खावण नैं ई फुरसत का मिळती हीनी। भांभरकैरी ४-४॥ वजी कूवो जोड़तो जिकैरो धू दुपारै री १२॥-१ वजी

कूवौ छोड़तौ। मसां सूं दो-अढाई घंटा आप'र बळधां नै सास खावण नै मिळती।

सुखौ बावौ करडौ खाटणियौ हौ।

घडा अर पखालां भराई रै हुंसाब में बावौ कदेई भौड़ घालतौ को हौ नी। पण आई कोहीनो कै बावै री आंख्यां में कोई धूड़ घाल जावै।

बरस भर में सुखौ बावै रै निखरची चोखी कमाई हुय जांवती ही। जात-न्यात में ई उणरौ वडौ काण-कायदौ हौ।

सुखै बावै नै कूवै रै मालकां नै एक बंधी रकम २५०) ३००) देवणी पड़ती ही। मालकां रै घरे ३०-३५ घडा पूगावणा पड़ता हा। मालकां नै छूट ही कै चावै जित्तौ पाणी खांधै ढोय ले जावौ। कदास मालक पखाल सूं पाणी मंगांवता तौ बानै खाली ढोवाई लागती। ढोवाई वै वेळा एकानौ पखाल ही। घड़ां सूं पाणी मंगांवता तौ जित्ता घड़ा, घड़ा-नाखणियौ नाखतौ, बदळै में, उत्ता ई घडा बैनै ढोवाई रै बदळै में मुफत भरण दिया जांवता।

मालकां रै मिंदरां-बगेच्यां में पाणी मुफत देवणौ पड़तौ। मिंदरां रा पूजारी तथा बगेची रा सेवग चावै जित्तौ पाणी न्हावण-निमटणियां सारू खांधै उखण'र लाय सकता हा। इण तरै री करारा नामौ मालकां अर बारीदार रै बीच में लिखियोड़ी हौवती ही।

बावौ हुसियार बारीदार हौ।

अबै किठै वे मजा ? अबै तौ मसीनां सूं पाणी निकळै। भावी-संजोग सूं बीजली जाय परी, तौ, १) १॥) रुपियै पखाल विकै।

कई दिनां में लोक पुराणै ढंग सूं पाणी काढ़णौ ई भूल जासी। बावै रौ परायै हाथ खेती है।

जे कदास अण चीती हुय जावै तौ पाणी-पाणी रोंच्ता मरां।

बावै नै खूटियां मोकळा बरस हुयग्या। पण वैरी याद भूलीजै को हैनी।

— ८ —

रमजान न्यारियो

रमजान विचले खामणै रो, वडी आंख्यां, जाडा भंवारा तीखो नाक, गोरो गट्ट रंग, काळा भंवर केस, लांगदार धोती, सोवणै रंग री पागड़ी अर पंजाबी पगरखी पैरतो हो। मुल्लां रै उपदेस सूं, पछै धोती री जागा पजामो अर पागड़ी री जागा टोपी पैरण लागग्यो हो।

रमजान नमाज पढ़'र कणै ई ठंडै-ठंडै में दिनुगेई तो कणै दुपारै रो, सहूकारां रै घरां, सोनारां रै दुकानां खनली तथा बीजी ठाथी ठाथी जागा री धूड़, सीक्यां रै झाडू सूं बार'र छाजली में भेळी करतो। पछै वैनै फटक'र वैमें आंख्यां गडाय देंवतो। इयां करण सूं, वैनै, सोनै चांदी रा खेरा-खंटा, नग अर कदे ई काई सोनै री जिनस लाघ जांवती।

रमजान न्यारियो हो।

लोक, नोकरी-चाकरी करण जांवता जणै रोटीवाळा पइसा निकळता। पण रमजान रै तो आखो दिन धूड़ री ई काम। कैवत ई है—न्यारियै धूड़ में ई पाई।

रमजान, सोनारां रै घरां अर चांदी-सोनै री दुकानां रै आगली धूड़-फूस मोल लेंवतो। कंई सेठा-साहूकारां री हवेल्यां खनली अर कंई जिठै कंई लाधण री आसा होंवती उण जागा री धूड़ भेळी कर लांवतो। आखी गळयां में भटकतो रैंवतो अर आपरै जचती जिकी जागा रो फूस भेळो कर लांवतो। इण तरै वो, आपरै घर खनै धूड़ रो मोटो ढिग्गो भेळो कर लेंवतो। पछै सगळै घर रा धूड़ रै धंधै में लागता। एक खाड खोदता अर सगळी धूड़ वैमें नाख देंवता। फेर वैनै एक पूरसूं छाणता। पछै कई दिनां तांई वैरै ऊपर पाणी छड़कता रैंवता। फेर वैनै फरकी कर'र वैरा लाडू बांधता।

सगळै लाडवां नै एक मोटै चूलै ऊपर वरतण मैं राखता। सायत वैनै तिजाब री धूंवी देता कन काई बीजी रसायण री किरिया सूं, धूड़ रै लाडवां मांय सूं चांदी, सोनौ, तांबौ अर पीतळ न्यारौ-न्यारौ काढ़ लेंवता। घणी वेळा तो इयांरी मैनत मोकळी फळती अर कदेई खाली मैनतवाळा पइसा ई निकळता।

लोग इचरज करता कै न्यारिया धूड़ मांय सूं चांदी-सोनो यांकर काढ़ लेवै है? कैवत है—न्यारियो मोर पांख री सोनौ उतार लेवै है।

रमजान हुंदरी ही।

रमजान घर री आसूधी ही। चोखौ खांवती-पीवती पैरती-ओढ़ती। घर मैं मोकळा गैणा-गांठा हा। दो-दो गायां ही। घर मैं धीणौ हो।

रुजगार इसो हो कै ३-४ महीना डट'र मैनत कर लेवण सूं बरस भर री गुजारी निकळ जांवती।

रमजान सोनी-चांदी गाळिया करती ही। भागी-टूटी सोनै-चांदी री जिनसां किफायत सूं मोल लेय'र वानै गाळती पछै न्यारी-न्यारी डळयां बणाय'र वेच देंवती। नकली, असली अर चळणसार सोनै री, वैनै खरी परख ही। आपरै धंधै मैं, कई नै काढ़'र को देंवती हीनी।

रमजान चतर ही।

रमजान ही हंसाळू, खुस मिजाज अर सौखीन। ईद रै दिन देखौ तो-साटण रा कपड़ा खरी जरी री टोपी, कलाबूत रै कामरी पगरखी।

रमजान मैं, रईसी री लटकौ हो। अखातीज अपर किन्ना री रुत मैं खूब धूंवा लगांवती। लटाव रा लटाव भरियोड़ा मंजे रा अर रंग-विरंगा वडा-वडा किन्ना लांवती। किन्ना ढील मैं लड़ना। लटाई नै, खळ-खळ ढीली छोड देंवती। किन्ना गुड़कता-गुड़ता अकास रा' तारा बण जांवता। पेच घुळना तो इसा घुळता जिको ना तो सुळमता अर नाई कइरी किन्नौ कटतौ। रमजान अर वै रै घरवाळा डागळै माथै ऊभा जोर-जोर सूं हाका करता-किन्नौ तोडिया मतीना भाई रे, पेच लड़ रया है, किन्नो कटियौ नहीं है। किन्नौ इतौ पेटौ छोड़तौ

जिकौ मंजो माथै सूं ऊपर टिरतौ दीखतौ । किन्नां री लड़त में सइकड़ौं रुपया पूजीज जांवता ।

रमजान किन्नां रौ लड़तियो हौ ।

रमजान में, एक लत खोटी ही । नितरौ आखर बाजरण जांवतौ । बिरखा री सबद्दो ई किया करतौ । नफो तो होंवतो कदेसीक होवतौ पण घाटौ तौ नितरौ लागतौ ईज । आखर ऊगतौ जद क्यों पूछौ हौ रमजान री बात ! खुसी रौ पार को रैंवतो होभी । खूब आपरी तारीफ करतौ । पीरजी नैं सीरणी चढांवतौ ।

घर रै खनकर कोई सबदैवाळो बैंवतौ दी सतैई रमजान, पैलड़ौ सवाल औ ईज पूछतौ-भाईजी क्या आखर खुलियौ ?

रमजान सटोरियौ हौ ।

गैमना पीर रै मेळै ऊपर, रमजान सगळै घरनै, ऊंठगाड्यां भाड़ै कर'र पीरजी रै दरसण सारू ले जांवतौ । बठै खूब ठाठ सं रैंवतो, खांवतौ-पीवतौ । फकीरां नै खैरात बांटतो ।

रमजान धरमात्मा हौ ।

अबै रमजान बूढ़ौ हुयग्यो । सोजी घणी कमती पड़गी । काम-धंधौ कंई वण आवै नहीं । आखो दिन खाट माथै बैठौ हुक्कौ पीवै गप्पां मारै । सुमत सूझै तौ अल्ला-अल्ला करण लागै । छेकड़ अल्ला वैनै आपरी दरगा में बुलाय लियौ ।



सुगनो बहीभाट

सुगनै लाई सोनै सैं जुग देखियो हो पण आज तो वैनै लोरै जुग मैं जीवणो पड़ै है।

दिनूगैई, कागावासी छाण'र, दिसा-फरागत सूं निमट'र, खंखोळो खाय'र, माथै परात धर'र, भुजिया-कचोळीवाळै री हाट जावणो पड़ै है। उठै गिण'र नग लेवै। पाछो घरे पूगै जितै १०-१०॥ री टैम हुय जावै। पछै पेट नै भाड़ो देय'र, माथे, माथै गमछैरी ईंढाणी बणाय'र, वैरै ऊपर लोरी परात धर'र, उभराणै पगां बरसती लाय, उछळतै खीरां मैं, रेलघाट तथा मजूरां रै कारखानां मैं पूगै।

धोती ऊपर, लपेटियोड़ै गमछै रै पल्लै, कदेई तो सूकी भांग अर कदेई गोळी, जाबतै सूं बांधियोड़ी राखतो।

४-४॥ बजी रै अड़ैगड़ै, सुगनो, किठैई, बूंटी-दासियां रै अखाड़ै मैं जाय ढुकतो। पछै लोरी परात पसवाड़ै मेल'र, गोळी नै छाण'र, निमटण नै जांवतो।

केई मजूर नगदी पइसा दे देवता तो केई हफतो या महीनो चूकतो जणै देवण री कैवता। कांकरई कर'र आटै री जुगाड़ दोरी-सोरी हुयई जांवती।

सुगनो हो ठिंगणै खामणै रो, छोटी-छोटी आंख्या करडकाबरी दाड़ी, बधियोड़ी जटा, टींडसी दाईं नाक, टिरियोडा कान, लिलाड़ माथै संदूर रो टीको, गुंदयां बायरी चोळो, गोडा सांईनो धोतियो अर हाथ मैं घोटो लियां घर रो मारग लेवतो।

घरे पूग'र थोड़ी टाबरां सं मिलम करण लागतो। इत्तै ई तो, लुगाई नैडी सिरक'र धीरै-धीरै कैवण लागती—आज तो लूण बधै हैं, तेल परसूं ई

खूटग्यो हो, मिरचांई आजोकीज है। पूछती-कंई साग लाया हो तो दे दो, जिको सुधार छमक दूं। पछै बूंटी रा दाग लागोड़ो गमछो संभालण लागती। पण साग किठै पड़ियो हो?

नसै री तार में, भारी गळै सूं सुगनो उथळो देंवता-आपांरै तो दाळ जोयीजै सागरो क्या करणो है। दाळई सदा सुवागण है।

दाळ ई वधै है, थानै काल कैयो होनी कै चारांनारी लेंवता आया।

सुगनो कैतो-हूं तो भूल आयो।

जणै वा लायण चटणी वांटण वैठ जांवती।

पछै सगळे जणा जीमण लागता जीम'जूठ'र टायर तो सूय जांवता। वहू वरतण मांजती, ऊंची पाची करती।

फेर घणी-वहू घरगिस्ती री बातां करता। बातां करते करते ई, थकियोड़ा होवण सूं, दोनां नै भेरा आवण लागती अर हुय जांवता गुडदापेच।

सुगनै वाप-काकै री जमानो देखियो हो। पुसकरणा वामणांरी वडी विरत ही, वारां वही भाट हा। विरतरा हजारां घर हा।

टावर रै जिलमतैई भाट री वही में वैरो नांव मंडाईजतो। भाट राजानै, मान सूं बुलांवता। आछो भोजन करांवता। ओछै सूं ओछा पांच रुपिया अर वेसी आपरी आमना मुजब नाव लिखाई रा देंवता। कोई पांचै कपड़ा अर गैणों देतो।

गांव-गोठ में ई भाट राजा नै वरस में एक-दोय वार जावणो पड़तो हो।

वियां अर हरख रै मौकै माथै आसूधै घरवाळो कोई-कोई, भाट राजा नै, सोनैरा फड़ा-कंटी पैरांवतो। आछा भोजन करांवतो। वही में इण री दाखलो दराईज तो।

कोई नवी हवेली चणांवतां, खोळै जांवतां अथवा ग्रौर नामी-कामी करतां तो वैरी ई दाखलौ भाट राजा री वही मैं दरीज नौ। इण मांडै उणां रौ चोखो मान-सनमान हांवतो, चोखी परापती हांवती।

उण वेळा, भाट राजा रै, किणी वात री कमी को ही नी। चोखो आदर मान हो अर सुख-सोरप सूं गुजारो होंवतो हो।

किठै वा माईतां री वखत अर किठै लाई सुगनै रो जमानो। आथै सई कै सूं ऊंचौ होवण आयो, भाटांरी वही मैं नांव मंडायानै। अबै तो मरणै परणै भाट राजा आवै तो जीमजासी विरतवाळां मैं बो हेत-उछाव रैयोई कोयनी। नहीं जणै, लाई सुगनै नै क्यों खुडिया खुचरतो फिरणो पड़ै।

विरत रा हजारां घर है अर दीठ घणा तो पांच, थोड़ा तो एक, भाट राजा नै नवा नांव लिखाई रा मिळणा सरू हुय जावे तो लाई सुगनै रो घर ऊंचो आंवतै क्या देरी लागै। दाळद वात री वात मैं, धुप को जावैनी ?

जात री पीढयां अर नामा-कामां रो पूरौ लेखो-जोखोई लिखीज जावै अर निकळ आवै भाट राजा रैं गुजारै री उपाव।

पैंला राज दरबार मे भाट राजा राजा री वही, पीढयां अर नातैं री तस्दीक सारू पेस हुया करती ही। इण सूं ई यांनै लाभ पूगतो हो।

पण देस काळ देखतां तो म्हारी ओ इतिहास अधूरोइ पड़ियो रैंवतो दीसै है।

भीखौ भठियारौ

भोर री ठंडी वेळा मैं भीखौ घास-फूस अर छोड़ा वाळ'र भट्ठ चेतन करतौ । पैला सरधा सं, ठाकुरजी ने हाथ जौड़तो जिके सं के वैरी रुजगार चोखौ चलै ।

भीखै री वहू वेरैं खनै मती रै रा वीज, गऊं, जंवार अर चिणा लाय'र मेलती ।

भट्ठ एक खानी, घर रै आगै चौकी ऊपर हो । खनैई मोकळी खुल्ली जागा ही जिठै, वैरी वहू आपरी दुकान लगाया करती । चौकी माथै, घास-फूस री एक छपरी छायोड़ी ही, छायां राखण सारू ।

इण काम सूं निपट'र, भीखै री वहू टाबरां नै जगांवती । टाबरां रा काळाकुट उणियारा, लुक्खा केस, पासळयां दीखै, कइ रै माथै रै केस इसा कतरियोड़ा जाणैं भेड मूंडी जियोड़ी हुवै । छोरी रा भींटा बिखरियोड़ा अर मैल-परसीणैं सूं चिपियोड़ा ।

फेर गूदड़ा सांठती, टाबरां नै दिसा बैठांवती, बारां हाथ-मूंडा धोंवती अर वासी फूस-वारी काढ़ती ।

टाबर, हरखांवता-हरखांवता, बाप खैन जाय बैठता । बाप किण तरै-धान सेकै है, आ बात, आंख्या गडाय'र देखता । एक-बीजै सूं आगै बैठण सारू लड़ण-झगड़ण लागता, आपस मैं, एक बीजैरा केस खांचता अर चूंटिया बोड़ता । कामरी वेळा भीखौ इयांरी बदमासी ॥ उफनर कैती-बळी आघडाई । फेर वहू नै हेलो पाड़'र कै तो-लेजा थारैं कुण कयां नै ।

मा तड़कर कैती-आधा बळो पीटणैं पड़ियां अर घोंसर मांय ले जांवती । लुक्खा सोगरां रा टुकड़ा तोड-तोड'र एक-एक टुकड़ो सगळां नै देंवती । सीराण मैं लायां नै ओईज मिळतौ अर इण सं वे राजी हुय जांवतां ।

ठाकुरजी रै घर सं रूप बंटती वेळा, भीखै री हाथ सगळां सूं नीचै रैयग्यों हो। वो काजळ रौ बीरो अर कोयलै री मासियाई हो।

धू दुपारै, बरसती लाय में, वो घर सूं बार निकळतो। एक मोटी ओडी में, चिणा, मतीरै रा बीज, धाणी, फूल्यां, छोटै-छोटै मेलै कोथळियां में भर'र ढंग सूं जचांवतो।

बीज दोय तरैरा-लूणिया अर अलूणा, चिणा तीन तरैरा छोलियोड़ा, बिनाछोलियोड़ा अर लूणिया-हळदिया छोलियोड़ा राखतो। एक पासी टूलिया मेलतो।

माथै, माथै मेली-चीगटी बिदरंगी पागड़ी, डील ऊपर फाटी मेली चोळी अर पगां में कारयां लागोड़ा जाडा जून पैरियोड़ी, भीखो, 'लौ चबीणौ लौ चबीणौ' कैवतो, चौक'र गळयां में घूमतो रैतो।

ओळखियोड़ी बोली सुण'र, घर-घर सूं, लुगायां, टाबर बैनै हेला पाड़ण लागता। आयो ई माजी, आयो ई दादीजी, आयो भाइया कैर, वो, सगळां नै राजी राखतो। कोई पइसां रा तो कोई धान रा चिणा-बीज लेतो। वो, सगळां नै, टूलियां सूं मिण'र चबीणौ देतो। पइसा एक डब्बी में अर धान कोथळी में भेळो करतो।

भीखौ ईंसाबियो हो।

सुकरवार नै खास तौर सूं बैरी घणी उडीक रैवती। वै दिन चिणा खावणा सुभ समझीजै है। वै दिन तो लाई नै केट ई को खावण देवता हानी। हेलो ऊपर हेलो आंवतो। वै दिन बैनै दोय-तीन वार भाज'र घर सं, चबीणौ लांवणो पड़तो। बीजै दिनां सूं, आज बैरै चौगणी बिकरी होंवती। इयां तो रोटीवाळा पइसा, आडे दिन ई, वो काढ़ लेवतो हो।

भीखै री बहू चौकी माथै बैठी चबीणौ वेचिया करती। दोयां री मजूरी सूं धाको धकतो हो।

दोये सैणा अर घर लोचू हा।

सिञ्या पड़ियां सूं कंई, क पैली भीखौ घरै पूगतौ। चिलम पीवतौ। लुगाई वेरी आटौ पीसती। वौ वीजै दिन सारू सामान लेवणनै चौवटै जांवतौ परौ। भाग्रताग्र चोखी तरै जाच'र जिनस लेंवतौ।

भीखौ जाणकार वौपारी हौ।

घर आंवतै रात पड जांवती। पछै वौ हाथ मूंडौ धोय'र बिसाइ खांवतौ। टाबरां री लाड़ करतौ अर बानै रमांवतौ-रीझांवतौ।

इतै ई तौ वेरी बहू थाली पुरस'र ले आंवती-फ़ुखता-फ़ुखता सोगरा अर लूण मिरचांरी चटणी।

भीखौ संतोखी हौ।

रातनै पाड़े-पाडोसरा भठियारा वेरी चौकी माथै आय जमता। गप्पां मारीजती। काण्या कैयीज ती। रुजगार-धंधै रै चलचाल री बातां चलती। चिलमां चेताईज ती। औईज लायां रै जी सोरौ करण री उपाव हौ।

भीखौ मेळू अर मौजी हौ।

भीखौ तौ परलोक पूगग्यौ। पण दुपारै री वेळा कदेई-कदेई इसी लखाईजै है कै जाणै वौ कड़क वोली में, 'लौ चबीणौ लौ चबीणौ' हेला पाड़ै है।

— ७ —

काबली नसीरुद्दीन

सळांदार मैलो-मैलो घणो ढीलो जाडो अर जागा-जागा चीगटो चोळो, एक खांधै ऊपर लोरो लंबो भूंगळो लटकायोड़ो बीजै खांधै में एक गोथळी, माथै कुल्लो अर पेची अर पगां मै हाथ भर लंबा चरमर-चरमर करता जूत पैरियोड़ा 'हिंग लेलो, हिंग लेलो' कैवतो काबली नसीरुद्दीन, आपरै वेट सागै जद म्हारी गळी में वडतो तो आणंद-री लैर वै जाती। घर रै आगै धरियोड़ै वड़ै पाटै ऊपर परवार री मंडली में बिराजियोड़ा वैदराजजी हरख'र हेतसूं हाथ बधाय'र कैवता, 'आवो खान बादर, बैठो!' तो खां साब ई खुस हो न हकीमजी कै'र पाटै ऊपर बैठ जांवतो।

लुगायां खांसाबरी ओळखयोड़ी बोली सुण'र बार आंवती अर एक-दो जणयां रुखड़ी दादी नै बधाई देवण नाठती कै थारो 'काबली भाई' आयो है।

छोरा-छंडा किलोल करता ऊंतावळा-ऊंतावळा कैता—

मींयो मछी मारणो,
कागै नै उडावणो,
कागै मारी टांच ए,
मींया मरग्या एक सो'र पांच ए।

गळी-गुवाड़ रा बडा-बूढा छोरां नै तड़कता अर कैता-काबली बाबोजी है, मींयो मच्छी मारणो नहीं कैवणो। दाकल सुण'र छोरा चुप का होय'र पाटै खनै आय ऊभता। काबली बाबो कई छोरै-छोरी नै दो-चार काजू, कई नै थोड़ा सा नेजा, तो कई नै दो-चार बिदाम दे'र पूछतो—रूखड़ी राजी हय, गोमा राजी हय, जावो सबको सलाम बोलो, मेवा दूंगां। जणै छोरा ऊंतावळा-ऊंतावळा एक सागै ई कैता हां राजी है। अर नाठ'र आपरी दादी नै बुलावण जांवता।

पछै रुखड़ी दादी काबली भाई री थाली पुरस'र लांवती जिकै में जाडी-जाड़ी रोट्यां, गवारफळी-खाखड़ी रौ साग, घी-खांड घाल'र चूरियोड़ो चूरमो-अर कटोरी भरियोड़ो दूध रो होवतो। बाबो कैतो लाडूला बैन, जणै रुखड़ी दादी मीठी झिड़की दे'र कैती-लाडू पडिया जाय है। लाडू कठै सूं लाऊं रे डाकी ? तूं तो धोयागटणो है। लाडू म्हारै उथै भतीजै बणा। सांभ'र राखिया है। तो भतीजै को जल्दी ला—कै'र बाबो जोर सूं हंस देवतो।

जीमणा री मिठाई विकणी आंवती जद दादी एक दो रुपयां री मिठाई मोल ले'र इयां बणा राख मेलती। थोड़ी मिठाई टाबराँ साहू इयां-रै सागै काबल पण भेजती।

जीमजूठ'र बाबो कोथली खोलतो अर बैन, बैन रै टाबरां साहू काबल सूं लायोड़ो मेवो अर हींग देवतो।

दादी अबै लागती ओलभा कादण-कदैई दो आंगळ री पुरजो ई को मेलेनी, मोह चोर है। माफ करो बाई अब जरूर भेजूंगा, खुदा के फजल से घर पर सब खुश हयां कै'र बाबो पिंड छोडावतो।

पछै आयोड़ी सगळी लुगाया सूं मीठो बोल'र कई न कंईदे'र सगळयां नै राजी कर'र मुतलब री बात छेड़तो। हींग रो डब्बो खोल'र लागतो माल बेचण। काई कैती-याला बाबा! तूं तो लोभी घणो, घणा दाम लेवै है। तो बाबो कै तो-अच्छा मरजी आवै दे।' काई कैती-हींग चोखी कायनी कोरो मिरसो आटो घलै हे। तो अचा-अच्चा दूसरा नमूना देखो बाई, अमारा हिंग माफक दूसरा हिंग नहीं मिलेगा, हमारा हिंग बौत अच्चा है. बौत सस्ता हे, कैतो।

बाबो दानों अर सैणो बोपारी हो।

काबली नसीरुद्दीन काबल सूं हींग'र मेवा लाय'र अठै चोखा पइसा खड़ा करतो-अर अठैरी जिनसां काबल में बेच'र दूणो चौगणो नफो करतो। काबली बाबो पक्को हैसाबियो हो।

काबली बाबो आपरो अधेलो ई को छोडतो होनी बीजैरो भळांई पइसो बैमें रैजावो । पाई-पाई उघराई कर'र पछै काबल दीसी मूंडो करतो ।

काबली बाबो पूरो लोभी हो ।

सबदो पटावण सारू बाबो कूड कपटई केवट लेती हो । आपरो माल हलको होंबतों तोई, अमारा माल बोत अच्छा हय, हम बुड्डा हय, जूट नहीं बोलता । अमारा भाव सस्ता है, कैर सबदो पटाय लेतो ।

काबली बाबो चोखो चंट अर चरियोडो हो ।

काबली बाबे री उमर ७० रै अडैगडै ही पण तोई बैरो लाल, बड़ी-बड़ी आंख्या, जाडा भंवरा, मैंदी सूं रंगियोडी दाड़ी, उफसियोडा जबाड़ा अर केस करड़काबरा हा । क्यों नहीं हो बै, ऊभे खांधे मेवा चरतो हो अर चोखो खावतो हो — खाध करै उपाधा । आपां रै अठै बूढां दाई बैरो मूंडो होकै दाई पोलो, आंखया रा खुड्डा बैठोड़ा, जबाड़ा चिपयोड़ा अर कवाड़ा भिळियोड़ा को हानी । बापड़ै अठै रै डैणां नै चोखी खुराक अर धपटवां मेवा कठै मिळणनै पड़िया है ।

काबली बाबो कड़कबाळो हो अर बत्तीसी खांडी को हुयी ही नी ।

काबली बाबै-रो बेटो बैसूं घणों चोखो'र खरो हो । कणै कणै ई बो एकलो आंवतो जणै सगळै बैरै खनै मेवो अर मोकली हींग लेता कूडो बो-कपटी को हो नी । बैदराजजी ओणनै बो 'खुदाई खिदमतगार' दळ री बातां सुणावतो जिकै रै बो एक सभासद हो ।

काबली बाबो अर बैरी बैन ठाकुरजी री दरगा में पूग ग्या, पण वांरी याद हालतां ई कालरी बात दाई बणियोड़ी है ।

अलखियौ

एक ऊंचौ ऊंचौ धोरौ, जिण माथै वडौ-दैलांनौ । बार थेर' कोटा' री
ाड । मांय दो पक्का थान—एक भैरू जी रौ, बी जौ हडमानजी रौ । खनै
एक झूंपड़ौ जिकै में अखंड जोत जगै । एक खूणै में—इकतारौ, कांगसिया,
रताळ, अर च्यार पांच चिलमां अर गांजै रौ डब्बौ । बीजै मैं-खप्पर अर
रडाऊ । तीजै में चूलौ, चींपियौ, तवौ, कठौती, हांड्यां अर ठीकरंरी हटड़ी ।
नै ई एक आळै में चिमनी अर तील्यां री पेटी । चौथै में एक लोरी पेटी
जिकै में काली ऊन रा लंबा-जाडा बटियोड़ा डोरा, कइयां में घूघरा पोयोड़ा
अर एक टोपसी में तेल संदूर । खनैई दो भगवां पंछिया । खूंटी माथै एक
अंगोछौ अर लंगोट लटकै ।

झूंपड़ै रै आगै एक लंबी-चवड़ी चौकी जिकै माथै भांग घोटण री
सिल्ला लोढ़ी अर एक पाणी री भरियोडी बालटी अर लौटी पड़ियौ । बीजै
पासी दो मांचा पड़िया जिकै माथै टाटरी राल्यां अर तकिया राखियोड़ा ।

भैरूंजी रै थान खनै एक गैर गंभीर दिरखत जिकैरी छैंया में एक मातौ
काळौ कुतौ जीभ काढ़ियां हांफतौ बैठौ ।

झूंपड़ै में रैवै दो जणा : एक गुरु बीजौ चेलौ । लोग इयां नैं
(अलखिया) कै वै । चेलौ कुंड माय सूं पाणी खांचंर लंगोटौ अंगोछौ मेल'र
थांरै सिनान करण री सगवाड करतौ ।

सिनान कर'र गुरु जोतवाळै सकोरै में घी घालतौ । पछै सिपाई
कवाज करैज्यां पांच पांडा आगै-लारैं धरतौ पाठ करतौ रैंवतौ । चेलौ टिक्कड़
सेकतो जितै गुरुजी कवाज करता रैंवता । पछै भैरूंजी हड़मान जी रै भोग
लगाय'र दो ये जीमण बैठता । थोड़ी बिसांई लेवता । चेलौ जितै झूंपड़ै नै
पाणी सूं तरानतर कर देवतौ ।

इत्तैई तौ मंडली आय जुटती खडकण लागता एकतारौ'र कांगसिया। चेतती सुल्फैरी चिलमां। नसैरी धुन में वे किणी बीजै ई लोक में विचरता।

अलखियौ बाबौ सतसंगी हो।

दिन ढळियां सिला माथै रंग लागता। भांग घूंटी छणती। जरदा पती लागती। मंडलीवाळा निपटण जांवता। चेलौ आया-गयां री टैल करतौ।

अलखियौ बाबौ अखाडची हो।

पछै लोग-लुगायां आय पूगती। कोई कैवती छोरै री पग कूंडालियै में आयग्यौ दीसै हैं। भाभडा-भूत लाग रैयै है। कोई निजर री डोरौ कर देवण री कैवती। कोई कैवतो म्हारी लुगाई ऊपर कैणई टूणा टामण कर दिया दीखै है, अधगैली हुयगी है। दाबर हाथ लागे कोयनी। कोई कैवतौ म्हारै घर में मंगलवार नै किणी सूयां सूं बींधीजियोडी संदूर चरचियोडी पूतळी नाखग्यौ है। जदसूं ई म्हारै घर में रूं-रूं में पीड़ उठगी है। कोई कैतौ-मनै डर है कै म्हारौ वैरी कठैई मनै मूठ नहीं मार देवै।

बाबौ सिनान कर'र लाल वस्तर धारण कर'र सगळां नै उपाव बतांवतौ। झाडा-फंका, डोरा-गैंडा अर तावीज देंवतौ।

कणैई कईनै बिच्छू सरप खाय जांवतौ तौ बौई उठै आय पूगतौ। बाबौ झाडौ दे'र जैर उतारतौ।

लोग दुखी आकळ-बाकळ आंवता खुसी-खुसी जांवता।

अलखियौ बाबौ परोपकारी हो।

सिंज्या पडन सूं थोडो पैली अलखियौ बाबौ आप रै लटूरिय केसां ऊपर राख रमावतौ, लिलाड़ माथै संदूर री बड़ी टीकी लगांवतौ, बूकियां माथै घूघरा पोयोडौ काळौ लंबौ डोरो कस'र बांध तौ सरीर ऊपर राख रमांवतौ, कंवर में घूघरा बांध तौ पछै टणमण टणमण करतौ भैरू भोळी लेर घर-घर सूं आटो मांग तौ। हींगळू दाई आख्यां, बेढंगौ भाज अर घूघरां री घमक रै मांगै वैरै 'बम-बम', 'अलख-अलख' री वाणी टाबरां अर कंवळै काळजै

आटो पैला खप्पर में लेंवतो, पछै मैली-चीगटी झोळी में घालतो, इणतरै, वो सैर री गळयां में घूमतो कदास कोई आटो नहीं घालतो अथवा जेज करतो, तो बावो वैरै घररै आगै पांच पग आगै पांच पग लारै धरतो कयाज करतो रैतो। गिरती नै उथप'र आटो घालणो ई पड़तो जणै धरणो छोडतो।

अलखियो बावो धरणो देवणियो हो।

घरै पूगतो जितै रात पड जांवती। पछै दिसा-फरागत सूं निपट'र सिनान करतो। फेर भैंरूजी-हड़मानजी रै जोत करतो अर सदा मुजब कयाज करतो-करतो पाठ करतो रैंवतो। इतैई में चेलो टिक्कड सेक लेंवतो। पछै भोग धर'र, दोये जीमण लागता।

कारज सिद्ध होवण सूं, सरधाळू भगत मोकळी सामगरी पूगाय देंवता। फक्कड भोग धर'र आप परसाद लेंवता अर सगळां नै वैंच देंवता।

एक वार, एक भगत पांच सेर आटो घी, खांड, अर मोकळो मेवो लायो। जोत सांरू अछूतो घी राख'र बाकी सामगरी रो भोग रांध लियो। घी खांड रो चकाचक चूरमो बणियो, मांय मेवो पधराइजियो। पछै टिक्कड रा वरावर-बरावर पांच भाग करीजिया। एक गाय, एक कुतै एक पंखरूवां रो अर दोय बीजा।

पछै सकोरै में, एक बडी खीरी राख'र ऊपर सूं धूप घी सींच देवतो। फकदैणी सी जोत जाग उठतो। थोड़ो चूरमो जोतरै ऊपर मेलतो। पछै भोग धर'र परसाद सगळांनै वैंचीजतो। इण तरै सामगरी काम में आंवती।

नगदी भेंट री, भांग बूंटी, सुलफो, गांजो, जरदा पत्ती आय जांवती।

अलखियो बावो फक्कड हो।

अलखियै वावै नै परलोक सिधारियां मोकळा वरस हुय गया। हाल लोक वैनै भूलिया कोयनी। वैरै अस्थान रै खनकर निकळतै पाण बील्योडी सगळी वातां याद आयै बिना को रैवैनी अर इसी लखाइजण लागै जाणै अलखियो बावो कयाज करतो पाठ कर रयो है!

रामलो भंगी

जागा-जागा फाटोड़ी, मैलो कुच'र ढीली ढ़ालो धोळो, माथै लीरा लटकतो दमालो अर पगां मैं दोय मेळ रा खांसड़ा पैरयां, रामलो वापड़ो, सीयाळै री ५ वजी, सामी ठंडी हेल चलती जणै, म्हांरी गळी मैं आंवतो।

बो हाथ मैं एक छाजली, बगल मैं बासांरी सीकयां री लंबी भाड़ू अर खूंजे मैं, टूटोड़ी चिलमड़ी राखतो।

गळी मांय सूं फूस-फांडो चुगर पैला थोड़ो सेक करतो। इयै खूणै सूं वै खूणै तांइ, सगळी गळी, बारतो। टणी तैर एक रै बाद बीजी गळी भाड़तो। वैरी बिरत बडी ही।

मूं'घारै थकै, वैरी बहू, फाटा घाघरियो पैरयां, पूर-पूर मैलो ओढ़णो ओढ़ियां अर आगे-आगे गधी नैं टोरियां आंवती अर आपरै धणी नैं जाजरू भाड़ावण मैं मदत देंवती।

रामलो गळी री भंगी हो।

लोक जद सीरै मारिया सीरख मांय सूं मूंडो ई को काढ़ता हा नी, तद, लाई रामलो काम मैं जुटतो हो। हाथामूं काम करतो अर मूं'ढै सूं मीठी राग मैं ठाकुरजी रा भजन गांवतो।

रामलो भगत हो।

सूरजनारायण जद ऊंचा चढ़ता अर गळी तावड़ै सूं भरीज जांवती, जणै टाबर-टीकर तावड़ो लेवण नैं नीसरता। सी-सी करता सगळे गांवता—

काढ़ो सूरज बाबा तावड़ियो
जीवै थांरी डावड़ियो
फेर — सी पड़ै छै डाढ़ो
कुप्पी सैं घी काढ़ो

रामूड़े री छोरोई तावड़े में एक पसवाड़े ऊभी रैंवती। छोरा बैनै काकरा मार'र कैंवता–आधो बळ भंगीडा भींटलेसी। छोरी कैंवती–मां बाप हूँ, तो घणो आधो ऊभी हूं। जणै छोरा–चिंच'र कैंवता साळा! थारी छैयां पड़ै हैनी? रामलो सुण'र उल्टो आपरै छोरै नै तडकतो अर बीजै खानी जाय'र, ऊभो रैंवण री कैंवतो। गळी रै टाबरां नै कैंवतो–हुकम कंवर साब रा, वणिया राखो मादेव!

रामलो जरणाशाळो हो।

काम पूरो कर'र रामलो घर-घर सूं रोटी मांगतो। ठंडी-बासी रोट्यां अर बासली-कुसली साग-दाळ सूं रामलैरी ओड़ी भरजांवती। कई घर सूं, रोटी नहीं मिळती तो रामलो कंई को कैंवतो हौनी।

रामलो संतोखी हो।

गळी में स्याड-पिणयार रो काम पड़तो, तो रामलो, मई नै–मास तांई, मैलो उटांवतो। जिकै रै बदळै में बैनै रोक रुपियो, धान अर स्याड़ रा, मैला गिदा गाभा मिळता हा। बीजो स्याड़ री नेग ई मिळतो!

उतारू मैला-फाटा कपड़ा, वे ई केई बार हाथा जोड़ी करणै सं बिरतवाळा, बैरै सामो बगाय देंवता। इण तरै रामलै रै पैरण–ओढ़ण री सगयड़ होंवती ही।

गळी में, गाय–ढाढो, मिन्नी–कुत्तो अर चिड़ी–कबूतर मर जांवतो, जणै रामलैरी बडी पूछ होंवती। जित्ते, मरियोड़ी जिनावर घर रै आगै सूं नहीं घींसीजतो उत्ते घरवाळा खाय-पीय सकै नहीं। रामलो मरियोड़े जिनावर नै, घींसतो जणै जाय'र संकट मिटतो। इये री बैनै धान-रोटी अर पईसां मिळ जांवता।

वो मरियोड़े जिनावर री खाल काढ़'र चौवटै में दामां री पूरी कसयड़ लगाय'र बेच देंवतो।

रामलो हुसियार बोपारी है।

गळी में, जीमण-जूठण होंवती जद रामलो मवडै सामो बैठो रैंवतो। गाय-ढांढां अर गिडकडां नै काढ़तो। कैंवतो ऐंट-जूठ, मनै घताइजो मां-बाप!

धूड़ अर पाणी में भीजियोड़ी ऐंठ-जूठ, एक कड़ाई में चैरी खातर नाई भेळी कर राखतो।

लाई सीयाळै में आधी रात तांई आस लगायां मवडै सामो बैठो रैंवतो। काम-काज निमटणै सूं कदेई तो घर-धणी वै वेळाई रीत री मिठाई पुरस देंवतो। कदेई 'दौड़जा, काल पुरससां' कैय'र, आड़ो जड़ लेंवतो। वापड़ो 'जो हुकम' कैय'र घर रो मारग लेवतो।

दूजै दिन रामलो पावड़ो कुदाळो लेय'र आंवतो अर भट्यां रा कोयला काढ़तो। बोरयां में भर'र लेजांवतो अर बेच'र टका खड़ा कर लेंवतो।

रामलो घर लोचू हो।

भंगीड़ा रातनै थकाण मिटावण अर जी बेलावण खातर दारू पीय'र फैल करण लागता। पण वो हो रामदेवजी रो भगत। दारू रै सामोई को जोंवतो होनी।

मिंदर में मंडळी में बैठ'र मस्ती सूं वो इकतारै ऊपर सबद गांवतो अर आपरी जिनावरां जिसी जूण रै दुख नै भूल'र किणी बीजी आलोक भोमका में बिचरतो। भंग्यारी मंडळी में वो, 'माराज' बजतो।

रामलो ज्ञानी हो।

केई खोड़ीला मिनख तो, लाई रामलै सूंई माथो लगायां बिना रैंवता को हानी। वे कैंवता अठै सफाई को करीनी, उठै को करीनी। रामलो 'लो मां-बाप' कैय'र सफाई करण लागतो। पण खोड़ीला खोड़ थोड़ी ई छोडै है।-आपड़ो उफत जांवतो। अठीनै वो साफ कर'र जावै उठीनै वे फेर गिंदगी बिखेर देवै। ऊपर सूं सभोग ओ देवै—काम नहीं होवै तो छोडदे बिरत थारो बाप बीजो आय जासी। घणो उफतियोड़ो रामलो कदेई रीसमें जबाब देय देंवतो किणरी जाड़ है जिको म्हारै ऊपर आय जावै। आवै जिकै नै न्यात में खैणी है'क नहीं।

रामलो किरकैयाळो हो।

— १० —

बिरधु सेवग

बिरधु रै बधेपो को हीनी। दोई जणा हा—आप अर बहू। बिरत बडी ही जिकै सूं मजै सूं काम चलतौ हो।

बहू बिरत रै घरां में आडे दिन बडी पापड़ करांवती। हाथकाम, जिदोई, जनोठण, बिरध, मायरै मोसे रै, जान, वरी अर भाईपै रै मंगळीक टांकडां में बैरै कामां री पोट खुल जांवती। पोकरणै बिरामणा में सावै ऊपर सामूहिक जिदोई अर बियां हुवै। लायण बहू नै, सास खावण नैं ई बखत को मिळती हीनी, फाई फींटी हुय जांवती। तिकै ऊपर तेड़ै ऊपर तेड़ा, जिठै मोड़ी पूगै उठै ई ओळमौ। इण मौकां ऊपर बा तेड़ा हांकारा, धान सोवणो चुगणो, मसाला पीसावणा, मणाबंध वड्यां पापड़ करावणा अर मंगळीक गीत गवावणैं में, अंग तोड़'र मदत करती। जिकै रै बदळै बैनैं चोखौ रीत रकानौ मिळतौ, कपड़ाई मिळता।

बिरधु रैई इण मौकां ऊपर खांच-ताण रैंवती। वैनैं ई, तेड़ा हांकरा करना पड़ता अर बिरत रैं घरां मैं हरेक मौकै माथै हाजर रैवणो पड़तौ। मंगलीक संख धुनी करणै री तौ बैरी खास काम हो। वौ सगळां सू आगै आगै संख बजावतौ टुरतौ पछै सगळे लारै टुरता। सामूहिक काम होवण सूं, वौ कपड़'र वौ कपड़ै। लाई कइ नै ऊत्तर दे सकै नहीं। कणै ई, कायौ होय'र, लाचारी जताय'र, हाथा जोड़ी करै तौ घर धणी री मंडी चढ़ जावै तौर बदल जावै।

इत्ती खांचा-ताण, हैरानी अर कामरी मार सैंवणरै बदळे मैं बिरधु अर बैरी बहू नैं, इण मौकां माथैं, नेगचारैं रैं रूप मैं जित्ती परापती होंवती उत्ती सूं सारी कसर निकळ जांवती।

बिरधु बिरत रौ सेवग हो।

महादेवजी रो मिंदर क्या तो श्रीमाली ब्राह्मण क्या सिन्धासी अर क्या सेवग पूजे। तो सिव मिंदरा रे पूजन री सेवगां री वारी बंधियोड़ी ही। कई री वारी दिनांरी आंवती तो कई री महीनां री। विरधु री ही वारी आंवती। उण बेला रो चढ़ावो पइसा टका नारेळ, वसतर, चावळ सोपारी अर महादेवजी ऊपर दुळायोड़ो दूध अर घी विरधु नैं मिळतो।

विरधु पूजारी हो।

विरधु नित्‌रोरी बिरत रे घरां मैं फेरी फिरण जांवतो। हाथ मैं एक बड़ी थाळी अर वैमैं मेलियोडी एक छोटी कटोरी चंनण सूं भरी रैंवती। 'जै ठांकुरजी री' कैंर वो, घर मैं बड़तो। घरवाळा चंनणरी टीकी लगाय'र, एक मुट्ठी आटो थाली मैं घाल देंवता। घरे पूगतो जणे थाळी आटे सूं भरीज जांवती।

विरधु फेरी फिरणियो हो।

मरणे जिसे अमंगळीक मौकां ऊपर वैरे अर वैरी बहू रैं मोकलो काम-काज खुल जांवतो।

मरणवाळै बूढ़ै प्राणी रे लारे खीचड़ा होवण री रीत है। 'खीचड़ा' मृतक भोजन नैं कैवे है। आदू री रीत तो आही के खाली बाजरी रो खीचड़ो अलूणो रांधीजतो। जिंदोई दारां नैं एक मिरियो अर बाकीरांनैं एक टीपरी घी मिळतो। पछै कढ़ी अर फिलका होवण लागग्या, जिकै खाली बड़ा नैं घालता टाबरां ने नहीं। जिकैसूं बधते-बधते, आ रीत थागा देयगी। अबै तो पुरवां भोजन होवण लागग्या। खीचडो तो कोई नहीं करै बदळै मैं चावळ दाळ अथवा खीचड़ी करै।

तो विरधु नै, भाई-बिरादरी रै घरां मैं खीचडां रा नैतो देवण नैं जावणो पड़तो। मदद होवणो पड़तो।

वेरी बहू, काढ़ै मेलै मैं, पूड़्यां बटावण मैं, दाळ दळावण मैं, आटो पीसावण मैं, धान चुगण मैं अर मसाला पीसावण मैं अंग तोड'र मदत देंवती। दोये धणी बहू उठै ई जीमता।

बिरधु कारू हौ।

बखत बदळी। सेवगां अर बिरतवाळां रा सम्बन्ध मीठै सूं खारा हुवग्या। सेवग कैवण लागा म्हे बामण हां, सूदर कोयनी। इतिहास पुराण रै पूरावै सूं वे आपने शाकद्वीपी ब्राह्मण सिद्ध करण लागा। बड़ी बड़ी सभावां कीनी।

पुसकरणा बामणां सेवगां सूं आपरै मिंदरां री पूजा छोडायली। इणां भद्दर होवणौ अर खीचड़ा जीमण बंध कर दिया। मरणै-परणै आवणौ बंध कर दियौ। दोनां रौ नातौ टूटग्यौ। सेवगांरी जागा गोमाळी काम करण लागा।

बिरधु ई बिरत छोड दी।

बिरधु री बिरत रे घरां में घरवाळा जिसी माण-काण ही। टाबर-टीकर, वेनै काकौ-बाबौ केर बतळांवता अर जीकारौ देंवता। बोई सगळां सूं माईतां जिसौ वरताव राखतौ।

बिरधु अर वेरी बहूनै परलोक सिधायानै मोकळा बरस हुयग्या।

मेळजोळ री मीठी बातां, मीठी टैम टळ भलां ई जावौ पण बरसां छेटै ई बैरी भीणी मीठी सिमरती मनां में मंडी रेवै है।

आज ई पुराणी रीत-रिवाज री चरचा चलै, जणै, बिरधु री सांगोपांग चितर एकरसी आंख्या आगै फिरण लाग जावै गोरौ रंग, ठिगणौ ठामणौ, अध बिचली आंख्या, लिलाड़ माथै चंनण री आड, कानां में मुरक्यां व भंवरियौ, डील ऊपर चोळौ, खांधै डुपटौ, गोडां साइनी धोतियौ अर पगां में देसी पगरखी।

— ११ —

रुघो खल्ला गांठणियो

आंखश काढ़तै ,वैसाख-जेठ रै तावड़ै मैं, इग्यारै बजी रै आसरै, बयां मैं खालड़ै री थेली लटकायां, खांधै ऊपर नीगळियोड़ी अर स्यांळ आयड़ी दूणियो लियां, घोटी रो भागी-टूटी अर चींथ्यां लपेटियोड़ी लकड़ी रै सायरै, खाथी-खाथी पग उठांवतो, रुघो, म्हांरै चौक मैं, आया करतो।

तुक्की-मुक्की करड-काबरी दाड़कली, काळी दराय उणियारो, माथै ऊपर चिदरंगी लीरा लटकती पाग लपेटियोड़ी, दाट उघाड़ी, मैलो कुच गुंद्यां वायरो चोळो पैरियोड़ो, आंख्यां नीचै छोटी-छोटी रेखावां अर कान टिरियोड़ा देख'र, सैज मैं ई, इंदाजो लाग जांवतो, कै, रुघै मोकला सीयाळा-ऊनाळा देखियोड़ा अर ठंडी ताती सैयोड़ी है।

चौक तावड़ै सं भरीज जांवतो। जणाँ, सेठ गोमदरामजी रै पाटै रै नीचै, मैलै पाणी री कूंडी खनै, धूड़रै बिछाणां ऊपर ई, अवधूत दाई, रुघो, टांगड़ा पसार'र, थोड़ी बिसराम करतो। पछै, सेठां रै घरसूं, पाणी री दूणियो भराय'र, आंख्यां छांटतो, पाणी पींवतो अर चिलमड़ी चेताय'र दम लगांवतो। फेर, थेलै मांय सं, योदी खाल रा टुकड़ा, नवी खाल, सूत री गेड़ी, जाडी सूई, सूयो, खाल चीरण री तीखी मूठदार पाती, छोटी चौकोर भाठी अर खाल भिजोवण सारू पाळसियो काढ़'र, ठौड़ री ठौड़ जचांवतो। एक पसवाड़ै दूणियो अर टूटोड़ी चिलमड़ी मेलतो।

चौकरा, सगळे, रुघै रो माण-काण राखता हा। लुगायां, बै रै आगै सूं, पगरखी पैरियां को नीसरती ही नी। कदास, भूल'र अणजाण मैं, कोई नीसर जांवती, तो, रुघो कैंवतो—आ तो खसम रै माथै ऊपर खल्ला ले जासी। लायण, लजखाणी होय'र, झट ई, पगरखी, हाथ मैं उठाय लेंवती।

चौकवाळा, क्या सांईना क्या छोटा, सगळे बैनै, 'रुघ्घौ दादौ' कैय'र बतळांवता हा। मरणै-परणै, जिलमणै-खूटणै ओणरी, बैनै, पूरी-पूरी ठा रैंवती ही।

धीनएयां अर टाबरां री, फाटी पगरखी, देखतौ जद, टो'कर कैंवतौ-खोलजा पगरखी, इणैं गांठ देऊंला, कदास पग मैं, कंई खुभ जावै जणै! वां री पगरखी री गंठाई को लेंवतौ हो नी। बड़ा-बूढ़ा, आपेई, आपरी पगरखी री गंठाई देय जांवता तौ ठीक, नहीं जणै, दादौ, तगादौ को करतौ हो नी।

कदेई, दादौ, बातां में लाग जांवतौ अर सिंज्या पड़ जांवती, तौ, कई न कई घर सूं, ऊनी दाळ-रोटी आय जांवती। टूंके मैं, चौक मैं, बैरौ, माईतां जिसौ माण हो।

जीमण-जूठण मैं, कारू-कमीणां नै, बौदौ निवड़ियै पछै, नेग पुरसै है। पण, दादै नै तौ, माण सं बेगोई जीमाय देंवता अर टाबरियां बगां कंई घाल देंवता।

सीयाळे मैं, मदरसै री छुट्टी रै दिन, तावड़ै मैं, छोरा, दादै खनै, बूझ बूझाकड़जी रा चुटकला अर काण्यां सुणता अर घणा राजी होंवता।

साईनां, दादै सूं, गिस्ती री बातां मैं, सलासूत लिया करता।

एक वार, गोमदरामजी रै घरै, छोरी रौ ब्यांव हो। मिठाई बणावणै अर जान जीमावण सारू कोटड़ी जोयीजती ही। एक कोटड़ी, सगां री ही, पण वे, हां-ना री खुलासा उथळो नहीं देय'र, टरकांवता हा। कदे, कैंवता-मुनीम जी मांय कोई नी, कदे कैंवतां कूंची। फलाणै नै दियोड़ी है, मंगावणी पड़सी।

एक दिन, गोमदरामजी, पाटै माथै बैठा, आई बात कर रया हा। इत्तै मैं, रुघ्घौ बोलियौ-इसा ई क्या सगा-सोई जिकौ कोटड़ी को देवैनी। क्या कोटड़ी घसीजै है? क्या कोटड़ी रौ कानौ तोड़ लेसां? क्या कोटड़ी लारै ले जावेला? माईत ई, म्हारी-म्हारी करता, अठै ई छोडग्या। आज, म्हारै सागै, कई नै भेजौ, देखां कोकर कंची को देवैनी। बात रा टका लागै है, गोमद भाई।

गोमद, एक जणै नै, दादै रै सागै कर दियो। दादो, ले ठाकुरजी रो नांव'र जाय खटकियो। जै रामजी री कीनी अर चाबी मांगी। सागी ई टरकाऊ उथळो मिळियो-मुनीमजी चौवटै गयोड़ा है।

'कदसीक आसी ?'

'आ कूण जाणै।'

'भला माणसां! कूंची री खातर क्या नित-नित गोता घालो हो ? म्हां रै फोड़ा पड़ रया है।'

'फोड़ा तो पड़ता ई होवैला। मुनीमजी नै आय जांवण दो। चाबी पूगाय देसां, थे भलांई सिधावो।'

'हूं, अठै ई बैठो हूं। इयै मिस, मुनीमजी रा दरसण तो हुय जावेला।

'मरजी थांरी'

'सेठसा किठै बिराजै है ?'

'वे क्या करैला ?'

'मालकां! थे, वानैं, म्हां रै आयां री, खड़क तो पूगाय दो।

इत्तैई, सेठ साबरी बग्घी री घंटी सुणीजी। दादै, जै रामजी री कीनी। सेठांई पाछी जै रामजी री कर'र पूछियो-बोलो, कांकर आवणो हुयो ?

'गोमदरामजी री बाई रो व्यांव है। आपरी कोटड़ी री कूंची मंगाई है।'

'खुसी सूं ले जावो। बांरी'ज कोटड़ी है। पण थोड़ा ठैरो, मुनीमजी नै आय जावण दो।'

'मालकां! मोकळा दिन फिरतां हुयग्या। आजतो, आप, कांकर ई कर'र चाबी दरायई देवो तो ठीक रैवै।'

घणा दिनां सं फिरो हो अर चाबी को मिळी नी ?

अबै ई किरपा कराय दो तो घणी आछी, मोटां सिरदारां!

सेठ सा, फट ई, सईस नै, चाबी लावण री कैयौ। मिनटां मैं ई, चाबी आयगी। दादै लाय'र गोमदरामजी नै सांपदी।

कदे-कदे, पोतो अड़ी करतौ जद, दादो बैंनै, सागै टोर लांवतौ। चौक वाळा लाड सूं बैंनै, दुपारौ देंवता। घर जाती वेळा थोड़ौ मीठौ-चूठौ अर टाबरां रा उतारू गाभा देंवता।

आज ई बात नैं मोकळा बरस हुयग्या। दादो अर दादै रा सांईना, सगळे सरगापुर सिधार ग्या। पण, हाल ई, जद हरिजन आंदोळण री बातां छिड़ै, जद, रुघै दादै रै मीठै मेळरी चरचा चलियां बिना को रैवैनी।



श्रीगोपाल ओझा

श्रीगोपाल साठां सूं ऊपर हा पण कड़क पचासावाळां जिसी ही; सांवळो बरण, धोळा केस, फूल गुलाबिया पागड़ी लिलाड़ माथै केसर री टीकी, आंख्यां बडी चस्मैं सूं ढकियोड़ी, जाडा भंवारा, टिरियोड़ै कांना मैं मुरक्यां, ऊजळो चोळो, खांधै डुपटो, गळै मैं मूंगियां री माळा, बगल मैं टीपणो, मीं पोतांवाळी ऊजळी धोती, हाथ मैं जाडो गेडियो अर पगां मैं पंजाबी पगरखी।

इयां री बिरत बडी ही अर बडो ई हो सेठां–सहूकारां मैं मान। एक तो औस्था मैं बडा, फेर पद मैं, जिणसूं, सगळे इयां नै पगेलागणा किया करता हा।

श्रीगोपालजी ओझा हा।

बिरत रै घरां मैं थाळी बाजतै ई, ओझा जी नै तेड़ो आंवतो। ओझाजी आय'र टाबर री वेळा लेंवता। भाई-बिरादरी, गळी–गुवाड़ अर मिंतर बधाई देवण सारू भेळा होंवता; घर–धणी नै पौसावतो तो सगळां नै एक–एक नारेळ देंवतो।

श्रीगोपाळजी जोतसी हा।

टाबरां री, जिन्दोयां पड़ती, तो ओझाजी री चायना होंवती मिरग-छाला, डंड, कोपीन, खड़ाऊ अर होमरी सामगरी, एक दिन पैला आय'र ओझाजी मंडाय जांवता। जिन्दोईवाळै दिन, देवतावांरी भेट अर दाना सू परबार, गिरती आपरी सरधा सारू ओझाजी री सेवा करतो। उण दिन ओझाजी टाबर रै कान मैं गायत्री मिंतर सुणांवता। कैंवता–देख बेटा, अबै तूं जिन्दोईदार हुवग्यो है, रोजीना गायत्री रो जप करे, सिंध्या करे, बिल में मूते मती अर गाय नै चंपती नै बतायै मती।

श्रीगोपालजी दीक्षा–गुरु हा।

बियां रै साथा में ओझाजी नै सांस लेवण नै ई बखत को मिळती हीनी। एक रौ तेड़ौ, बीजै री तेड़ौ, तेढै ऊपर तेडौ। श्रीझाजी फाया-फोंटा हुए जांवता। पण कमाई ई इण मौकै मौकळी होंवती जिणसूं कसर निकळ जांवती। हरेक घर सूं [४०] सूं कम तौ क्या मिळता, वेसी भलांई मिळौ। मन्ना अर जनोठण श्रोखरी रसोई में श्रोझाजी रै घरवाळा मदत दरांवता।

जिन्दोई अर बियां ऊपर कई जजमान रौ हाथ तंग होंवतौ तौ श्रोझाजी चीठी लिखाय'र अथवा अडाणगत माथै रुपिया श्रोधार तोल देंवता वैरो काम कढ़ाय'र, तीजै कान ठा को पड़ण देंवताजी।

श्रोझाजी श्राडी वेळा रा मदतगार हा।

परणै में श्रोझाजी री गरज रैंवती, तौ मरणै में ई वां बिना काम क चलतौ हौनी। भाणी नै श्रांगण में पसारण सूं लेय'र बारै महीना तांई श्रोझाजी री जरूरत पड़ती रैंवती। इण मौकै ऊपर गरड़ पुराण री भेट तथा रोटी पूरी होवणै सूं गैणा-कपड़ा रे रूप में श्रोझाजी नै चोखी परापती हुय जांवती ही।

श्रोझा जी किरत करावणिया अर पुराण वाचक हा।

परब ऊपर बिरत-उपवास री कथाश्रां ई श्रोझाजी बांचता अर भेट-पूजावौ श्रापरै घरे ले जांवता।

कोई भागवत सुण'र तौ कोई बैतरणी कर'र श्रोझाजी नै पैरावणी पैरांवता। पैरावणी में गैणा-कपड़ा अर भेट रा रुपिया मोकळा मिळता।

श्रोझाजी श्राछा कमाऊ हा।

सेठां-साहूकारां रै घररी श्रोझाजी रै चोखी पैदा ही, मरणै-परणै ऊपर। गऊदान ई मोकळा मिळता हा, कई नगद तौ कई सरूप। श्रौझाजी रै घर में २-३ गायां तौ सासती रैंवती ईज। दूहजती जिकै तौ श्रोझाजी चारौ-चारौ देंवता रैंवता। श्रइण्या री खेवट वे करता को हानी।

श्रोझाजी स्वार्थी हा।

ओझाजी रै घर में धन री मटक्यां भरी रैंवती ही। गैणा-गांठा ई मोकळा हा। कमाई-कजाई ई मोकळी ही। लैण-दैण अर खंधी-किसती री कमाई वे मोकळी करता हा। दीपती आसामी सूं १००) लारै १०) अर अणदीपती सूं २०) काटता। गैणा-गांठा अर जागा-जमीं ऊपर ई रुपिया ओधार तोलता अर रुपयो सईकड़ो ब्याज लेंवता।

ओझाजी थौरा हा।

ओझाजी ऊपर राम राजी हा, तौ ई लोभ को छूट तौ हीनी। रोज कचेड़ी की फेरी देंवता ईज; कई ऊपर दावो, कई ऊपर कुड़की, तौ कई रै घर री लीलामी करावण नै। अदालत रा चपरासी अर अहलकारां री भेट-पूजा करताई रैंवता हा।

ओझाजी झागड़ू हा।

धन में धन संदोरण रै लोभ में वै सुख, संतोस अर भजन सूं आधा आधा दौड़ता हा। बामण हा फेर ओझा, जिकी कई पाठ-पूजा तौ लोक देखापै करणी ई पड़ती ही। वैसूं बेगीई पिंडो छोडाय'र सेठां-सहूकारां रै घरे पूजा-पाठ करण नै जांवता परा। सेठां नै भगवान री सेवा करण री फुरसत किठै? ओझाजी नै पोख'र, सेवा रो फळ सोरप सूं परापत कर लेंवता। ओझाजी रै भाग री क्या कैणी। सेवा अर दिरब दोनूं मिळ जांवता।

ओझाजी लोभी अर झंझटी हा।

ओझाजी परलोक सिधारग्या; पइसां री पोट लारै ई छौड़ग्या, छिदामई लारै को लीवीनी।

सैंसार में स्वारथ रौ ई नातौ है। इण वास्ते, स्वारथ सूं ई, मौकै-टाँकै वांरी याद आई जावै है।

— १३ —

सिरदार रंगारौ

एक ऊंडौ-ऊंडौ गूंभारियौ। जिकै में एक मुसलमान परवार-रैवै। हवा अर चानणै री परवेस वैमें नहीं-रै समान। ऊजाळै में सगळै बार चौक में मांचां ऊपर सूवै। सियाळै में तौ वांरी गुफा में सीरौ संचार नहीं। चौमासै में छांट-छंड़कै री वेळा में वां लाया में कोजी बीतती; घडीक गूंभारियै में तो घड़ीक बार। गूंभारियै में इसौ अमूजौ जिकौ पंखै सूं हवा लेंवते-लेंवते हाथ ऊतर देवण लागतो।

इण परवार में से मिळाय'र पांच प्राणी हा: बूढ़ौ सुलतान, वैरी लुगाई-लिछमी, बडौ बेटौ करीम अर वैरी बहू अर पांचवौ सिरदार। एक राख राखी ही बकरी जिकै रौ दूध बारी-बट्टै सगळां नै मिळतौ। सिरदार, दिसा-फरागत जांवतौ जणै बकरी नै चराय-पाय लांवतौ।

दिनूगै वजू कर'र सगळै नमाज पढ़ता। फेर एक जणी पीसणै-पोवणै में लागती अर बीजा सगळै कपड़ा रंगण में। करीम हौ पैलवान, वौ अखाडै सूं मौड़ौ आंवतौ। आंवतै ई वौई काम में जुट-जांवतौ।

आंवता-जांवता गळी-गुवाड़ रा लोग थोड़ा पग ठांभता वां सूं ऊभा-ऊभाई वातां कर'र टुर जांवता।

औ परवार मेळू अर मस्त हौ।

सरदार हौ बरस गिटणी अर टेणी। रंग पक्कौ, तुक्कल अर दाडी मुंडायोडी। छोरां में छोरौ अर बडां में बडौ। सगळा में इसौ घुळियौ-मिळियौ जाणै वां सांईनौईज सैतरी माळ्यां छतै सूं चिपयोडी रैवै ज्यौं सगळै वै सूं चिपिया रैंवता। वौ सगळां नै राजी राखतौ।

गूंभारियै सनैई पाडोसी री दैलान चौकी ही। रोटी-बाटी-खाय'र सिरदार अर वैरी मंडळी उठै जाय जमती। वौ सगळां नै भूतां, परियां, टूणै-टामण अर सेर री गपां सुणावतौ। ख्याळ-तमासां अर रमतां रा गीत ई गाय'र सुणावतौ-चौमासा लारल्यां। वैरै कंठ मैं मिसरी घोळियोड़ी ही। कदैई जचती तौ तास रमण लागता कदैई दिल्लै।

सिरदार मीठौ अर मंडळीबाज हो।

कदैई वौ संगळयां सागै सैल करण नैं निकळ जांवतौ। वै वेळा माथै ऊपर कामदार चूणियोड़ी टोपी, चूणियोड़ौ चोळौ, लांगदार धोती अर खांधै ऊपर फळयां गूथियोडौ गमछौ राखतौ। कपड़ां मैं सुगंद ई लगांवतौ।

साढ़ी तीन-च्यार घड़ियां परवारेवाळा सगळै काम मैं लाग जांवता। सै जीलगाय'र, अंग तोड'र काम करता। साढ़ी छय बजी करीम अखाड़ै अर सिरदार बाल मंडळी सागै बकरी चरावण-पावण दूर जांवतौ।

सिंज्यां नैं सगळै सागै ई नमाज पढ़ता। करीम री वहू रसोई चाढ़ती अर खनै बैठी-वैरी सासू लिछमी सिख्या अर सायता देंवती। इण वेळा फेर बाल-मंडली आय जुटती। सै मन बैलांवता। इतै ई रसोई बण जांवती। मंडली बरखास्त होंवती। मिनख पैला अर लुगायां पछै जीमती।

हमैं, साइना आय जमता। अकास मैं अठीनै चंदरमा मुळकतौ, उठीनै औ किलोल करता। आधी रात तांई तरै-तरै रा खेल खेलता :—

(१) कान कुचरियौ भू भं भरियौ।

(२) मियांजी-मियांजी घोड़ी वेचौगे ? कित्ता टके ? लाख टके।

(३) अंबर घोळियौ।

(४) चिलम-चिलम धूताड़ियौ··

सिरदार खेलार अर हंसोड़ हो। सिरदार आप रै बाप नैं 'बाजी' कैंवतौ अर इयां ई मंडळीवाळा। वै बाजी सूं, गैंडा, तावीज, अर झाड़ा सीख लिया हा।

सिरदार रै खनै लोग बिच्छू, फैटोड़ै, चासरी भाड़ी लगवावण आंवता। पांच-सात जणा तौ ऊभाई रैंवता।

सिरदार भाड़ागर हौ।

बात री बात में बरस बीत गया। सिरदार अबै दुपग्गै सूं चौपग्गौ हुयग्यौ। पेट खुल ग्यौ। दो बेटा अर एक बेटी हुयगी। माईत खुदा री दरगा में जाय पूगा। बडौ भाई करीम अजमेर गयौ परौ। थैरै माथै ऊपर गिरस्ती रौ भार आय पड़ियौ। अबै वैनै पेळा सं-घणौ खाटणौ पड़तौ हौ।

आपरै हाथां सूं लोग-लुगायां अर टाबरां रा कपड़ा रंगतौ। लुगायां रा ओढ़णा, धोत्यां—पिरोजिया, केसरिया, कसूंबल, चंनणियां, मोतिया, कपूरिया, फूल गुलाबिया, बलदेसाही अर धनसवाए रंगतौ। मी इवेजी री चूनड़ी अर बीजी भांत रा बंधेजा बांधतौ।

मिनखां रा पाग-पेचा अर चीर ई इणी रंगा रा रंग तौ। फागण में टाबरां रा चोळा माथै छांटणा छांटतौ अर लुगायां री धोती छांटणदार फागणिया रंगतौ। मिनख इण मईनै में पाग, डुपटा अर चोळा पतंगिया रंगांवता।

सिरदार कारीगर हौ।

वौ सगळां में इयां घुळ-मिळ गयौ हौ जाणै दूध में मिसरी। लोक लखाईज तौई कोयनी।

इमें वैनै रमणै-फिरणै नै टैम को लाधती नी। पण मंडळीवाळां री मिनवार अर मिन तौ राखणी ई पड़तौ हौ।

रातनै थोड़ी फुरसत लाधती। जणै संगळयां रै सागै गपां मारतौ। गुटकतौ अर रागोळिया करतौ।

तिंवार-टांकडां ऊपर सिरदार रा टाबर लाफसी ओग पुरसाय ले जांवता।

सिरदार सगळां री बन्नू बण बैठौ हौ।

याजी जवानी में ई अठे आयग्या हा। इयां नै अठे वसियां नै आधी सदी हुयगी ही।

पण समै रै साचे-माचे, मेळ-मीलत रै गुणकारी इमरत में वैर विरोध रो विस घुलण लागग्यो।

भारत री बंटवाड़ो होय'र पाकिस्तान नवो बण ग्यो। मीठी निजर अर मीठो मेळ खारी हुवण लागग्यो। आख्यां सूं हेतरी जागा जैर बरसण लागग्यो। वैर, सूग, हिंसा री भावना सूं मिनख राखस बणग्या।

इयैरी पैल मियां भाइयां कीवी। मसीतां अर घरां में गुपत सभावां होवण लागी। नित नवी-नवी गप्पां उड़ती के काल रातनै मुसलमान फलाणै हिन्दवां रै मौले ऊपर जाय चढ़िया तो परसूं फलाणै। मूंडा जित्ताई वातां। हवा में भै छायग्यो। नवा-नवा उणियारा अर नवा नवा गुल खिलण लागा। कई जागा तो माथा फूटग्या। हिंसा रै घातक जैर री असर फैलणवाळी वेमारी दाई सगळी जागा फैलग्यो। वैरां माथै हवांयां उडण लागी। एकबीजै नै सक अर वे विसवास री निजर सूं जोवण लागा।

सिरदार इण लैर में वेयग्यो। वैई किरड़ै दाई रंग बदलियो। वैरै घरै मियांमंडळी भेळी होवण लागी। वैरी मंडळीवाळां रै नाक नेई अवै सिरदार रै घर रै आजू-वाजू सकरी-सडियोडी वास आवण लागी। प्यारा खारा हुयग्या।

सिरदार री आंख्यां सूं ई बदळियोडा रंग-ढंग लुकिया को रयानी। अवै मियांमंडळी वैरै घरै भेळी नहीं होय'र जंगळ में किणी गुपत जागा जुटण लागी।

वैरै घरै लोगां तिजाब री बोतलां पडी देखी। अवै वोई सागी तन्नू सिरदार परायो बण'र आंख्यां में रड़कण लाग ग्यो।

समंदर में रेवणो अर मगरमच्छ सं वैर कांकर निभै। छेकड़ सिरदार रा पग छूट ग्या।

एक दिन वौ आपरी आधै सइकैवाळी मीठी मैरबान वस्ती अर गूंभारियै रै मोह नै त्याग'र चंपत वणग्यौ।

पोलस नै बुलाय'र गूंभारियै रौ ताळौ तोडायो गयौ। केई फूट फैलावण वाळी चीठ्यां मिळी जिण सूं लोकां रौ सक पक्कौ हुयग्यौ।

धीरै-धीरै काळ चक्कर घूमियो। आपसी मेळ-जोळ री चरचावां चलण लागी। उखाडियोड़ा पाछा जमण लागा।

पण म्हारो सिरदार गयौ जिको आयडो ई गयो। नैरै गूंभारियै रै आगै सूं बैवती वेळा हालई लारली मीठी वात्यांरी याद वैर विरोध अर बिछोडै रै गैरै अंधारै-नै चीर'र चित्त नै चटपट चेतन कर'र छांई मांई हुय जावै है।

गनी ठंठारो

ऊनाळै री रुत-लाय पड़ै तौ इसी कै मत पूछौ। जी चावै, खाय-पीलिया अर आराम। उसी धू दुपारै री वेळा, कांधै-दो बोरयां लियोड़ी, एक में नवा अबोट अर बीजी में भागा-टूटा अर जूना-पुराणा पीतळ, तांबै, कांसै रा बरतन भरियां, गनी ठंठारो म्हारी गळी में आंवतो। 'पीतळ, तांबै, कांसी रा नवा बरतण ले लो, जूना भागा-टूटा बदळाय लो' री आवाज सुण'र लुगायां जाण जाती के गनी बाबो आयो है। आप आपरी-जरूरत माफक लुगायां काई भागा-टूटा बरतण देयर बदळै में नवा लेंवती तौ काई उणांरा दाम ले लेती। काई जूना बरतणां माय सूं छांटर जोइजता बरतण सस्ती-कीमत में लेती। गनीबाबो सारीतरै रो सबदी पटाय लेतौ, कई नै निरा'सर नाराज को करतौनी।

गनी बाबो सैणो-स्यानो बोपारी हो।

बाबै हज कीयोड़ी ही। पूरो खुदा परस्त हो। कूड़-कपट आटै में लूण घालै जित्तोई बरत तो। सगळा नै खरी सला देतो। गायकां नै ठग खावण री नीयत को राखतो नी। आपरै श्राजबी नफैरै साथै गायकां रै भलाई री ई ध्यान राखतो।

घणी-वार लुगायां नै कैतो, बेट्यां घर गिरती रो ध्यान राखो। अण जोइजता बरतण मोल लेर अणूतो खरचो मती करो। मिनख लाई दिनूंगै सं सिंझ्या तांई खटै है, जणै पइसो कमावै है। पइसा आसांरै लागै कोयनी।

काई जूना बरतणारै बदळै नवां लेंवती तो गनी कैतो बाई! बरतण तौ हाल चोखा पडिया है-भागा टूटा कोयनी। पछै क्यों पगरखी में पग कटावै? क्यों काम में आवै जिसां नै आधी कीमत में बेचै है। तूं चावै तौ इं इयां नै नवां जिसा कर लाऊं। म्हारी मेनतरा थोड़ा पइसा देणा पडेला। कई नै कैतो,

बेटी तू कैवै है नी. इसा मोकळा बरतण घर में है, फेर नवा क्यों मोल ले'र फालतू पइसा गमावै है । मिनख कमाई दोरी घणी करै है अर थे बिना समझियां खरच कर नाखो । हैसाब करण में गडबड गोटाळो को करतो हौनी । गळी री लुगायां नैं बैरी इमानदारी ऊपर भरोसो हो । बाबो नेक नीयत वाळो हो ।

बाबै रो कद ठिगणो, आंख्यां छोटी, रंग गऊं वरणो, छोटी धौळी-दाडी, कान टिरियोडा, मूंढा आगै सूं ओछो करायोडी लारै सूं लंबी; माथै ऊपर छोटो फाटो-पुराणो फैंटो, चोळो पैरियोड़ो जिकै ऊपर परसीणैरा स्यांळ, गिरियां सूं थोड़ी ऊंची-ऊंची सळ भरियोड़ी सूंथण पगां में देसी जूती-राखतो । ऊंमर साठ सूं ऊंची ही पण तोई कड़क चोखो हो, तांत करारी ही । सदा हंस मुख रैवतो । पको—मैनती हो ।

घर गिरती री जरूरत रै सगळा बरतना रा उण खनै नमूना रैता : गूंणियो, तपेली, थाळी, कटोरा, कटोर्‌यां, लोटा, टोपिया, गिलास, कटोरदान, पाळी, कुड्छी वगैरै ।

बाबो जूनां बरतणां रै बदळै नवा देंवतो । भागा-टूटा बरतण सस्तीं कीमत में ले लेतो ।

कई कई नैं पइसै री मोळ रै कारण जूना धींगड, माईतां रै हाथ रा बरतण बेच'र घर खर्च सारू दाम खड़ा करना होंवता, वो बाबो, वे बरतण आधी कीमत में ले लेंवतो । एक जांणती, म्हारै गुजारै रा पइसा आयग्या, बीजो जाणती, म्हारै घर में नफो हुयो । दोनूरी मिळी जुळी जुगती चलती ।

बाबो मेळू अर पक्को बौपारी हो ।

अबै गनी परमात्मारी दरगा में पूग ग्यो, पण हालतांई गळी गुवाड़-वाळा बैरी लायकी'र नेक—नीयती नै भूला कोयनी । बैरी मीठी याद बणियोड़ी है ।

मघो फेरीवाळो

मघो हो फेरीवाळो। लाई गरीब अर मैनती हो। धू दुपारै री बरसती लाय में, खांधां ऊपर दो थोरयां में, काचरयां फळयां, फोफळिया, खेलरा, सांगरयां, कैर अर अमचूर भरी राखतो। गळी-गुवाड़ में धड़ती ई रागोळिया करतो—

काचरयां लोजी काचरयां लो
म्हारारे गायकजी थे काचरयां ई लो
सांगरयां लोजी सांगरयां लो
म्हारा रे गायकजी थे सांगरयां ई लो।
जिसो माल उसो ई गीत।

कईनै बाबाजी कई नै काकाजी, कई नै मामाजी, कई नै भाईजी कैर, सगळां नै अपणापो देखांवतो। लुगायां नै दादीजी, बडियाजी, मामाजी, बाईजी अर भौजाईजी कैर नैड़ो पड़तो।

कई रै माल लेवण री थोड़ी जचती तो मघो, बैनै आ कै'र पइसां री फिकर तो कीया मतीना, मोड़ा वेगा, हाथ वसू हुवै जणैई दे दिया, राजी कर लेंवतो। कैंवतो इसो सस्तो सवदो भळै मिळैला कोयनी। घर बैठै गिंगा आई है दो पइसा कसरो सवदो है। मनै तो थोड़ै नफैसं माल लूंटावणो है माल खलास करणो है जणै नोरा काढ़ूं हूं।

काई कैती-बाला मघा। सांगरयां बोदी अर कोरा खोखा है। कुण पइसा धूड़ में नाखै।

जणै हस'र उथळो देंवतो—भूवाजी! माल छांट'र लेलो। माल सस्तो बेचूं हूं। जणै थेइ कसर काढ़ो हो। हूं रुपियै री डौढ सेर बेचूं हूं। बाजार में डौढ़ रुपयैरी सेर दोरी मिळैला। कंई इयै बातनै सोचो हो'क?

ऊपर सूं बछ-बारस, नागडा-पांच्यां अर आसरा टांकड़ा आवै है। घर मैं सांगरयां होसी तो हाती-हाती को करणो पड़ैनी। देखलो साय! हूं तो थांरै फायदै अर सबीतैरी वात कैवूं हूं। लैणी नहीं लैणी तो थांरै सारू है।

काइ कैंवती-अमचूर तो काळी दराय है। साग रो रंग बिगड़ जावै, कूण लेवै, आधी चाळ आधड़ी ई।

जणौ कैंवतौ-अमचूर नै ऊनै पाणी मैं छोड़'र देखो तो खरी। लाल फसूंबल रंग देसी। थांनै काळो फूटरो क्या देखणो है। साग मैं खटाई परी चोखी लाग जासी। इत्ती सस्ती अमचूर मिळण नै किठै पड़ी है। चौवटै मैं रुपियै सेर मसां सूं मिळसी। थांरी खुसी, पगरखी मैं पग कटावणो हुवै तो भलांई कटावो। म्हारो माल तो उभोई को रैवैनी।

इयां बांरो जीं जमाय'र माल बेच देंवतो। काइ ओधार राखती तो काइ नगद पइसा बटाय देंवती।

बात आही कै मघो पसारयां खनै सूं जूनी-चीदी माल पइसां मैं ले आंवतो अर चोखा दाम खड़ा कर लेतो। पसारी जाणता कूटळो निकळियो मघो जाणतो कूटळै मांय सूं रोटी निकळी। दोनू रै लाभ रो सवदो हो। बाइ बत्तीसी तो बीरो छत्तीसो।

मघो पसारयां रो कमाऊ बेटो हो।

मघो टाबर हो जणै ई मां मरगी ही। मांमै रै घर छोटै सूं वडो हुयो। मांमैं मांमी नै ई वै तो मां बाप जाणिया।

मघो रंग-रूप रो काळो, आंख्यां कोचरी दाई, नाक तीखो, भंवारा काजळ री पतली रेख दाइ, सरीर खाखड़ियै दाई, धोती री जागा काठै लट्ठै रो पंछियो पैरियोडो, टाट उवाड़ी। कणै ई पगां मैं खेटर फट-फट करता तो कणै ई पगे उभराणो। माथै, माथै कळरी कतरणी फेरायोड़ी, दाड़ी रा झब्बा च्यार-च्यार आंगळ आंतरै, कंवर कुड़ियोडी, लिलाड़ माथै सूं परसींणै रा टोपा पड़ै।

गमछौ चोरयां रै वार कर लपेटियोड़ी राखतौ। तावड़ौ कित्तौ ई त्रांवया काढ़ौ, खीरा उछळौ, ऊपर भलांई टाट तपौ अर नीचै पग बळौ, पण, औ डाकीड़ौ तौ नेम सूं गळी—गुवाड़ अर चौक मौलां में फेरी फिरण में घू चूकै तौ चूकतौ।

मघौ अवधूत हौ।

गिसत्यां नै घर बैठै सस्तौ माल बेचणियौ, मघै छाडै बीजौ कोई को हौनी।

मघौ करड़ौ नेमी अर खरौ मजूर हौ।

घणी मेनत करणियै नै भूख ई घणी लागै। मघौ, चार-पांच बाजरी रा सोगरा, लूण-मिरचांरी चटणी सूं पधराय लेंवतौ। बिरखा-पाणी हुयोड़ौ होंवतौ अर फळी, खाखड़ी, टींडसी अर लोइया घणा सस्ता मिळता तौ बियां रौ साग बणाय लेंवतौ।

लाई ऊंमर घणी ओछी लायौ। ४०-४२ में तौ परलोक ई पूगग्यौ। मघै बिना कूण बडंग मारै—

काचरयां लौजी काचरयां लौ

म्हारा रे गायकजी थे काचरयां ई लौ

सांगरयां लौजी सांगरयां लौ, म्हारा रे गायकजी थे सांगरयांई लौ

घर बैठै सूका साग सांगरयां, फळयां, फोफळियां, काचरयां,. जोयीजै जदै मघै रौ घाटौ घणौ अखरै।

वारे! मरदाना मघा! वा!

भीलियो खवास

बुध, सुक्कर अर अदीतवार-। वडा-बूढ़ा, टाबर, सगळा कई नै आंख्या फाड़ियै उडीकै। दिनूगै री आठ साढ़ी-आठरी वेळा। दिसा-फरागत सूं सैन निपटियोड़ा। केई चौकी तो केई पाटै माथै बैठा। मजै सूं वातां करै अर टैम टाळै।

इतै ई मैं एक काळी दराय ठिंगणी मूरती मूंडै माथै सीवळ रा वण, तुक्की-मुक्की दाड़ी, आंख्यां ऊपर चसमो लगायोडो जिकै री एक डांडी साबत अर बीजी री जागा डोरो जिको एक कान रै बारकर लपेटियोड़ो, माथै, माथै चीगटी बिदरंगी पागड़ी, तोई टाट उघाड़ी, गोडां साईनी ऊंची-ऊंची धोती, बगल मैं खाल री रछाणी, फाटो मैलो चोळो, खांधै माथै मैलो फाटो गमछो, पगां मैं खांसड़ा अर हाथ मैं लियोड़ै गेडियै नै, खट-खट टेकतो, पग दूचकांवतो, भीळियो बाबो म्हांरी गळी मैं आंवतो।

भीळियो खवास हो।

भीळियै, बाबै री रछाणी मैं दो-तीन देसी पाछणा नेरणी, सिल्ली, एक खाल री टुकड़ो, देसी कतरणी, कळ री कतरणी, मूंडो देखण री जूनो धूंधळो काच अर देसी कांगसियो रैवतो। पाछणा रा नांव, टाबरां नै राजी राखण सारू, भीलियै बाबै मिसरी रो पाछणो, खांड री पाछणो कढ़ाय राखिया हा।

बाबो पैली पोत टाबरां री संवार करतो। टाबर बाबै सूं डर'र भेळा-भेळा होंवता। माईत टाबरां नै खोळै मैं लेय'र बैठता। एक तो बाबैरो पाछणो दोरो चलतो बीजो हाथ धूजतो। जागा-जागा टाबरां रै माथै मैं टांचा पड़ जांवता। टाबर भेळो-भेळो हुवै। जणै माईत टाबरं री हीमत बंधावण सारू बैरै मगरां मैं थापी देय'र कैंवता-सूरवीर है, भीलै रा सड़का तो सूरा ई

सैवै। बाबौ, हस'र कैंवतौ–रो ना बेटा! लै. देख अबकलै मिसरी री पाळणो काढ़ूं हूं। औ सोरी चलसी। अर देख बेटा! तनै 'चल मेरी डमकी डमाक डम किसका झींटिया किसका तम वाळी काणी कैसूं। तू तौ सैणो वणो ईज है। लै–आलै, संवार वणगी, इयां कैय'र रीझावौ रैंवतौ। इत्ते ऊपर ई कोई टाबर नाना बाजी करतौ जणे माईत री निजर बंचाय'र, बाबौ बै रै माथै में एक हळकै ठोलै री कचीड़ देंवतौ अर आंख्यां काढ़तौ। टाबर भै रै मारियौ बोलौ-चोलौ हुय जांवतौ।

भीलियौ बाबौ टाबरां रौ गुरू हौ।

बौ टाबरां रै माथै ऊपर लंबी चोटी अर चोटी रै नीचै दो गळियौं अर देवता रै नांव री लटी राख'र कळरी कतरणी फेर देंवतौ। पछै आगलै पासी पाळणैं सूं चूलौ बणाय देंवतौ जिकी खिजमत कयीजती। कोई छोरी कैंवतौ-म्हारी दादी पट्टा राखण री कयौ है, जणै बैनै बुचकार'र कैंवतौ–ना बेटा! देढ़ांवाळा बुग्घा कुण रखावै, कोजा लागै। आपांनै तौ खिजमत करावणी, गळी-लटी रखावणी अर फंदियौ गूंथावणी जोयीजै।

टाबरां री हरजामत सूं निपट'र, बडा-बूढ़ां री करतौ।

भीळियौ बि तेसरी हौ।

बारै मास, मुफत में, बिरतवाळां री हजामत वणांवतौ।

औसर-मुकतै, मरणै-परणै अर मंगलीक टांकडां माथै भीळियै रै घर भररा बिरतवाळां रै घरै जींमता अर मोकळौ पुरसाय'र लांवता। साध, आगरणी, माईपै, झंडा, जिन्दोई, ब्यांव अर मरणै माथै बैरी घणी-घणी पूछ हौंवती अर चोखौ नेगचारौ मिळतौ।

बिरतवाळा परदेस सूं आंवता जणै भीळियै बाबै नै चोळौ, धोती अर पाग देंवता। बारै महीनां में बीजौ कपडौ ई देंवता।

भीळियै री बहू विरत रै घरां में लुगायां रा माथा गूंथण जांवती। टांकडैं-मुकतै माथै आंठा बासण दोनूं जणा मांजता। बासण लायां नै झाल री झाल मांजणा पड़ता। घरां में गोळी घालनी पड़ती।

माथै गूंथाई रे वदळै में विरतवाळा बावै री बहू नै कई देंवता-लेंवता रैंवता। इयै सूं परवार मंगळीक टांकडां ऊपर घोळरा, नारेळ-टका ई इयै नै मिळता।

इण तरै भीळियै बावै रै परवार रो विरतवाळां रै घरां सूं गुजारो हुंवतो।

लाई बावै नै विरत रै घरां रै काम सूं फुरसत ई का मिळती हीनीं। कणै कई रो तेड़ो तो कणै कई रो।

वियां अर नुखतां माथै बावौ घर री निगराणी राखतौ। बासण-बरतण, चीज-वस्त गुमणै पांवती नहीं।

कदे ई कोई बौदै में गैणौ-गांठो खोलर भूल जांवती तौ बावौ ठावौ संभळाय'र दे देंवतौ।

भीलियौ बावौ डंभक अर खरो मिनख हो।

मौकै-टौकै, घरवाळा बैरी सलासूत लेंवता हा। कारू-कमीण समफ'र बै रै सागै ओछौ-हळको बौवार को करता हानी।

भीलियै बावै री, विरत रै घरां में माईतां दाई काण-कायदो हो।

अबै किठै बा वात ? जमानौ ई बदळ ग्यौ। विरत री बंधाण ढीलो पड़ ग्यौ। अबै तौ काम थोड़ौ करणौ पण टका बजाय'र लेंवणा। विरत रो नाई मिळणौ ई ओखो हुयग्यो है। अबै तो कारू-कमीण कैवै है कै म्हांनै विरत पौसावै ई कोयनी।

मरणै-परणै भीळियै बावै री याद आयां बिना रैवै कोयनी। बैरो धांटो अखरै। छेकड़ उमोड़ा, आंडा तौ हुवै'क ?

समाज रो किसो चोखो बंधाण हो। सैं आप-आप रो काम करता अर आपरी जागा पूछीजता-पूजीजता। ऊंच-नीच री गिंदी भावना को हीनी।

हरदास दहीवाळो

अगूण पासी उजास होवण लागतो जणै सोवणी कड़क बोली मैं सुणीजतो—'दही चवकौ-दही चवकौ'। अबै तो टाबर-टीकर हरदास री बोली ओळख'र, नाचण कूदण लागता अर बैनी लावण खातर अड़ी करण लागता।

हरदास दहीवाळो हो।

आधी गली मैं अवाज मारियोड़ी इसी जाण पड़ती जाणै म्हांरी ई गळी मैं ई मारी होवै। बडा-बूढ़ा, सगळे उडीक लगायां ऊभा रैवता। जेज होंवती जोय'र उथपण लागता। पण टाबरां रै तो आवक ई खटावण को होंवती हीनी। लागता पग पीटण, कर लेंवता भरभोलियै दाई मूंडो।

वानै राजीकरण सारू घरवाळा कैंवता—'आयो ओ हरदासजी बैगा आयो; मनियै नै दही देवो। इत्तैई रंग उड़ियोड़ी मैली पागड़ी पैरियां हजामत बधियोड़ी, खांधै ऊपर एक मैलो-फाटो गमछो, जिकै ऊपर भाबोलियो भरियोड़ी, एक हाथ मैं जाड़ो गेडियो लियां, गोडा सांईनो मैलो पंछियो पैरिया अर पगां मैं जाड़ा जूत धारण कियां हरदास 'आयो ई-आयोई कैंवतो आय धमकतो।

भाओलियो एक पीतल री थाली सं, ढ़कियोड़ो रैवतो एक पासी बाट अर बीजै पासी धान रैवतो। धान रै मांय धड़ो करण सारू बडा छोटा गट्ठा रैवता। वारी वारी सगळां नै दही तोल'र देवतो। टाबर चंगी अर थरकी लेवता अर उठै ऊभा-ऊभाई चाट जांवता। फेर हाथ पसार देवता। माईत पालता, जद हरदास कैवतो—बालक बादसा है, ऐ तो इयांई करसी।

हरदास जरणाळो हो।

एक गळी सूं बीजी, बीजी सूं तीजी, इणी तैर घणी सारी गळियां में घूम'र ५-७ झाब्योलिया वेच लेंवतो। घरै आंवतो जणै थाळी धान अर टकां सूं भरीज जांवती।

हरदास मैंनती हो।

दुपारै, ग्वांर फळी-खाखड़ी रै साग सूं अर फोगलै रै रायतै में, बाजरी रा सोगरा भोर'र पेट पूजा करतो। पछै घंटा-दोय-घंटा तप्पड़ बिछाय'र, लेट लगांवतो। पण माछर-माख्यां टिकण को दैवतीनी। जद कदेई पंखी करतो अर कदेई डुपटो ओढ़ लेंवतो। कदेई रसोई सूं निमट'र सिवदास री मां वायतै घालण लागती। जणै, थोड़ी ई ताळ में घुर्र-घुर्र करण लाग तो।

हरदास संतोखी हो।

च्यार-पांच बजी हरदास भट्टी चेतांवतो। अगन में घी री छांटी नाख'र 'धंबकाळी' कैय'र भगती सूं हाथ जोड़ तो। पछै कड़ाई चढांवतो। वैमें दूध भरतो। मधरी आंच सूं दूध रढीजतो। धीरै-धीरै दूध माथै सागीड़ी जाडी थर आय जांवती।

हरदास कारीगर हो।

हरदास रै घर में थोडी-घणी दही बंचतीई। जिकै सूं तरै तरै रा साग बण जांवता। दई में वेसण घोळ'र कदेई सिवदासरी मां गट्टा कदेई चीलड़ी, कदेई पतोल कर लेंवती। कदेई गळी मांय सूं मांगी छाछ मिळ जांवती तो राब अर कढ़ी बणाय लेंवती।

कदेई रोही सूं तोड़'र लायोड़ा कैर-सांगर्‌यां रो साग बण जांवतो। इयां धाको धकतो हो।

घर में टाबर टोळी रामजी रो दीन हो। माठै-मटकै चलतो, जदई गाडी गुड़क तो हो।

मे'रो रुत में हरदास, गांव जांवतो परो। उठै वैरा पिता पुरखां खेत हा। कच्चो टापरियो हो।

लुगायां-टाबरां नेईं, वी सागै ले जांवतौ। सगळे खेत में बुथी सारू काम करता। डीलां सूं मजूरी करता।

टाबरां नै उठै, गायां-भैंसा रो दूध पीवण नै मिळतौ।

हरी टांच रोही, हरा-हरा खेत - जियारी श्राय जांवती। बारै मईना खावण जोगी, धान राखर बाकी वेच देंवतो। चोखी रकम खड़ीं हुय जांवती। श्रा रकम व्यांव-टांकडां में लागती।

हरदास घर-लोचू हौ।

— १८ —

भोळियो डाकोत

छनीवार नै भोळियो म्हांरै चौक श्रोर गळी रै घरां में चक्कर काटिया करतौ। कैंवतौ-ग्राज ठाकुरजी रै तिथ वारस, वार छनीवार। फलाणै रै सरीरां सुख, स्याग-भाग श्रछी रालै, बेल वधै, ग्वाडी फळै, श्रर नैण गोडा निरोग राखै छनी भगवान! कथा सूंणौ, तेल'र फेरी घताश्रो, अन्न दाता।

कोई छनीछर जीरी कथा सुण'र एक टको दैंवती, तो कोई धै रै मैलै-काळै लोटै में मीठौ तेल घालतो।

कोई पूछती-देखती भोळिया, म्हारा बोलतै नांव सूं गिरै-गोचर किसाक है? कोई परदेस रैवणियां री दिन-दसा पूछती। कोई मांदे तातै रा गिरै गोचर पूछतां कै कद तांई श्राछौ होसी?

भोळियो श्रांगळयां ऊपर मीन, मेख, मिथुन, करक, सिंग गिण'र कई नै मंगळ, राहू, तो कई नै छनीछरजी री दसा बतांवतो श्रर काळी चीजा री दान काळा तिल, काळी बकरी, काळी भैंस री दान करण री कैतो। कई नै चोखी कमाई री, कई नै बेगोई श्राछो होवण री कैतो। बिरत सूं ई भोळियै रै परवार री गुजारो चलती ही।

भोळियो डाकोत श्रर जोतकी हो।

मरणै-परणै भोळियो हाथ में लालटैण लेय'र रातरी दो तीन बजी तांई बिरत रै घरां श्रागै घूमतो श्रर घर रै मुखियै नै ऊपर लिखियै मुजब श्रासीस दैंवती श्रर गरीबी सूं कैंवती-हां, सुणाई हुय जावै मां-बाप। भोळियै रा कारज श्रापई सा८ सी। फेरी देंवते-देंवते महीनो हुयग्यो है किरपा नाथ।

जणै पंचायती भेळी होंवती श्रर भोळियै री बीनती साथै विचार होंवतो। न्यारी-न्यारी पंचायत्यां सूं बैनै एक मुस्त २१) ३१) सायता रा मिळता।

इण तरै मरणै परणै ऊपर रीत मुजब खरच करण सारू थैरै कनै एक रकम भेळी हुय जांवती। भिरतवाळो होवण सूं थैरी आपरी जात में घणो मान हो।

भोळियो बड़ो भिरतवाळो हो।

भोळियो जथा नाव तथा गुणवाळो हो। घर री घाटी कदै पूरी को होवतीनी। गरीबी सूं गुजराण करतो। सीदातो को होनी।

भोळियो मैनती अर सायसवाळो हो।

थैरी छोटी-छोटी कक्की आंख्यां, टिरियोडा कान, करड़काबरा केस, वध्योडा नख हा, डील माथै फाटी-मैली चोळी, लिलाड माथै चंनण री आड़ गळै में रुदराखरी माळा, बगल में फाटी-चीगटी टीपणी, खांधै ऊपर मैली-चीगटी कोथळी, एक हाथ में मैली-काळी लोटी, बीजै में छोटी री लकड़ी अर पगां में फरड़-फरड़ करता खेटर हा।

ओसर-मुखतै, सराध-छमछरी-ऊपर नगळां रै जीम लैणै रै पछै थैनै ई कंई नेग रै तौर ऊपर दियो जांवतो हो।

मंगळीक मौकां ऊपर थैरो आवणो असुभ समझियो जांवतो हो। घर रै मांय तो कोई थैनै बडन ई को देवतो होनी। कदेई कोई आपरी गरज स दान-पुन रै नियत थैनै मवोडै रै माय बडन ई देयता तोई थैरै लारै सूं पाणी रा छांटा नाखता; इण वास्तै कै फेर इण खुड़पगै रा पग घर में नही पड़ै। थैसूं एक तरै री छूत राखी जांवती ही।

मळ-मास में भोळियै रै बण-आंवती। इयै मास में सबीतै मुजब एक दिन तो सगळै बड़ा-चीलड़ा, पूड़ी-कचोळी, कंई मीठो, पापड़-खीचिया अर सलावड़ा तळता ईज। बै दिन डाकोत नै सै तेल अर मोठां री दाळ दान करै। कोई तळियोडी सामगरी ई देवै। इण तरै आज रै दिन भोळियै नै मोकळी-दाळ अर मोकळो तेल मिळ जांवतो।

बैधृत, वितीपात अर गिरण रै दिन भोळियै रै घणासारा छाया दान आय जांवता, तेल सूं भरियोडी कांसी री छिरपली में सोनै री टिकड़ी घाल'र उण में आपरी छैयां देख'र दान देवता।

भोळियै रै घर में छोटा-मोटा सात जीव हा जिकां री गुजारौ बिरत रै घरां सूं चालतौ।

घर में दान में आयोड़ी एक बकरी ही जिण री दूध टाबरां अर बूढ़ा नै पांती सर मिळ जांवतौ हौ। टाबर वैनै रोहो में चराय-पाय लांवता हा।

लाई डोकरौ भोळियौ परलोक सिधार ग्यौ। वैरै औसर री खरचौ पंचायती सूं मिळ ग्यौ।

भोळियै री बहू आंख्यां सूं लाचार हुयगी ही तौई जीवी जित्तै बैटे-पोतै री खांधौ झाळ'र बिरत रै घरां री फेरी लगांवती रयी। छेकड़ वैनै ई सौ बरसां पूग ग्या।

भोळियै रा बेटा-पोता नेम सं तौ नहीं पण छिड़िये-बिछड़िये चक्कर लगाय जावै है।

भोळियै री नांव मिटग्यौ पण याद को मिटी नी।

छनीशर रै दिन कणी ई इसी-लखाई जै जाणै बौ आंवतौ ई होसी, अर कानां में वैरा बोल गूंजण लागै-फलाणै रै सरीरां सुख, भाग-सुवाग वधै, छनीदेव रिख्या करै।



सीतकी मालण

एकै पासी च्यार-साढ़ी च्यार री अमल होंवतो अर लुगायां सिंज्या री रसोई चाढण री चिंता करण लागती कै इतै ई मैं कई री मीठी-कड़क बोली आंवती 'चंदळियौ, सांगरयां, कैर, क्वांरपाठौ, बैंगण लौ ए।'

घर-घर सूं लुगायां बार आय पूछती—

'चंदळियौ क्या भाव ए' ?

'देऊं तो पइसै रौ पाव हूं। थे भेळी सेर लेवौ तौ एक पइसौ ओछौ दिया।'

'ना बाई, तूं मौंगो देवै है। चौवटै मैं दो टकां रौ सेर भर हुणौ ई गळी मैं लाया है।'

'तौ हूं माथै भार-उखणियै फिरूं तौ कंई साव नैई फिरूं हूं। पइसौ खण तौ मनैई जोयीजै।'

'हां बाई ! आ बात तौ वाजब है।'

'तौ तोल दूं सेर भर ?'

'तोल दे।'

'ए सीतकी ! सांगरयां कांकर दी ?'

'दादी जी ! आठ सेर री-धणी सस्ती है, अर है ई मी।'

'दस सेर री देवै तो एक आनै री तोल दे।'

'लौ दादी जी ! थांनै तौ राजी राख सूं-ऐलौ १० सेर री।'

'आगै कंई कोयनी भलौ, आईज रैसी'।

'ठीक दादी जी'

'हाए, कैर कांकर दिया, सीतकी ?'

'बाई सा, छः सेर रालौ, देखौ !'

'वाली, कैर बडा घणा, मीं कोयनी' ।

'बड़ा टाळ'र दे दे सूं ।'

'तौ दे देखो दो आनां रा, भाव सात सेर रौ लगायें ।'

'लौ फनी, रात दिन रा गायक हौ ।'

'इण तरै सीतकी मीठी बोली सूं सगलां नै पटायर मोकळौ साग वेच जांवती ।

सीतकी माळण ही । अर ही मिठबोली'र चतर ।

सीतकी वैगी उठती । गायां नै चांटो देंवती । ऊंठ नै नीरती । गायां रौ दूध दूंवती । फोटा थापती । बिलाणौ करती । पछै सीतकी री सासू पोतै नै सागै लेय'री वंध्यावाळां रै दूध देवण जांवती । आधौ दूध वंध्यां में देंवता, आधै रौ बिलाणौ होंवतो ।

सीतकी री घर गिस्ती री चोखी व्यवस्था ही ।

सीतकी रौ धणी-नत्थू, कूवै पखाळ भरण जांवतौ, अर वंधीवाळां रै घरै नाखतौ । जचती तौ खुली-ई-वेच देंवतौ । काळै ऊनाळै में पाणी री मांग घणी । पखालिया मूंडै मांग्या दाम लेवै । लोक-ऊपरा तळी पड़ै-चौ कैवै पैला म्हारै नाखौ, तौ वौ कैवै म्हारै । इणगी वंधीवाळां री तक्कड़ । खांचांताणी में पखालियां री-बण आंवती । चोखा पईसा तोड़ता ।

सीतकी खोरसै सूं निवट, न्हाय-धोय'र तुळछी रै क्यारै में पाणी सींचती । पछै रसोई चाढ़ती । घू-दुपारै रो १२-१२॥ नत्थू पाछौ घरै ढूकतौ । थोड़ी बिसांई खांवतौ । ऊंठ नै ठाण वांधतो । पछै रोटी-टुकड़ै भेळौ होंवतौ । सीतकी पछै पेट नै भाड़ो देंवती । फेर वरसती ळाय में धू-दुपारै जंगळ मैं सांगरयां, कैर, खोखा, गंदिया तोड़ण निकळती । इतै ओडी फिरण री वेळा हुय जांवती ।

सीतकी फड़ी मैनतण ही ।

रात पडियां सीतकी घरै पूगती जित्ते सासू रसोई चढ़ाय दे'वती। नत्थू गायां नै बांटो दे'र दू लेतो। ऊंठ नै नीरतो पांवतो। नत्थू तौ बंधीवाळा रै दूध पूगावण जांवतो परो। सीतकी सगळां नै जीमावण-जूठावण में लागती। पछै आप जीम'र चौकौ बरतण करती। दूध कढ़ावती, जमांवती। पछै घमड़-घमड़ आटो पीसती।

मे छांट हुयां नत्थू वाड़ी जांवतो परो। उठै खाखड़िया, मतीरा, फल्यां बांवतो। जणै खायण सीतकी नै मरण नैई फुरसत का मिळती हीनी।

नीरणी, दूवारी खोरसे अर रसोई पाणी सूं वैगी वैगी निवट'र सीतकी वाड़ी भातो लेर जांवती। पाछी आंवती वड़ी-सारी-ओडी काकड़ियां, लोइयां वगैरां सूं छल लांवती। मण भर सूं ऊंचो भार हुय जांवतो। घर पूग'र कइयां रै घरै थेपड्यां री ओडी भर'र पूगावती। जिते चौथटे री टैम हुय जांवती। उठै थोक मैं माल वेच लेंवती।

सीतकी घरलोचू अर सैणी ही।

टांकड़ै तिंवार ऊपर सीतकी आपरै वंधियोड़ै घरां मैं आखा सं झोळी भर लांवती।

पछै घर-घर सूं टांकड़ै तिंवार ऊपर रांधियोडी सामग्री पुरसाय लांवती।

सीतकी राव-चोवार अर घरोपो राखणवाळी ही।

मालण्यां तौ छिडी-बिछड़ी हाळ ई केई आवै है। पण सीतकीवाळी माया सीतकी खनै ही। कठै वै रै जिसो मेळ-मिळाप, कठै घरोपो।

— २० —

नंदौ ओड

माथै ऊपर चोदी अर लीरा लटकती दमाली, काना मैं मुरक्यां, तुक्की मुक्की दाड़कली, उघाड़ी डील, गोडां सांईनी काठी धोतियौ, पगां मैं कारयां लागोडा लंबा-लंबा जूत, हाथ मैं डांग लियै, दिन चढ़ियां नदौ, सैर री गळियां मैं कमठाणा जोवण निसरतौ।

नंदौ ओड हौ।

भाख फाटी नंदौ रात नै उछेरियोडा गधेडां नै जोवण निसरतौ। गधेडा रोही मैं लाधै किठै? पण नंदौ तौ थोड़ी ताळ मैं ई सगळां नै जोय'र टोर लांवतौ; नंदौ गधेडां रै पगां रां सैनाण जोतो-जोतौ जिठै बे हौंवता उठैई जाय ढूकतौ।

नंदौ पागी हौ।

कमठाणा होवै जिठै धूड़ोई री क्या पार! नंदौ धूड रै ढिगलां मैं आंख्यां गडाय'र मन ई मन फळावट करतौ। पछै घर-धणी सं दोयाई रै मुकातैरी बात करतौ।

नंदौ हिंसाबियौ हौ।

नंदौ हरखांवतो कै अबकलै खेप कमाई री चोखी है। घर-धणी, हरखांवतो कै सयदौ सस्तो ई ढुकी है। दान-धाव मैं दोये ई एक बीजै रा कान कतरू हा। पण नंदै रौ पिरथी माता मैं लैणियौ हौ—कामां जैरा जामा। दो पइसां रौ लाभ नंदै पासी ई रैवतौ।

नंदौ चतर सयदी पटावणियौ हौ।

नंदै री घहू धैगी थकी बाजरी रा सोगरा सेकती। जिकै ऊपर लूण-मिरच्यां री चटणी नाल'र सगळे जीमण लागता। पछै गधां ऊपर पाखड़ा,

कुदाळा, भांफ अर टावर वगां, थोडा सोगरा'र चटणी मेल'र नंदो लुगायां-टाबरां समेत, कमठाणै ढूकतो। छैंयां'री जागा डेरा लगांवतो पछै सगळे काम में लागता। मोटियार ढ़िगली खोद'र पूर सळूजांवता। टाबर-लुगायां धूड़ोड़ै रा गधा भर'र सैर परकोटै सूं बार नाखण जांवता। ऊपर सूं लाय बरसै, पसवाड़ै सूं पवन खीरा उछाळै, सरीर ऊपर परसीणै रा परणाळा वैवै पण कंई मजाल जिको थोड़ी फेट खायलै। हां, तिस लागती जणै नींगळियोड़ै चाडै मांयलो पाणी मोटो लोटो भर'र ऊभाई डकळ-डकळ पी लेंवता। कद सूरज मेळ वैठनो'र, कद बापड़ा विसराम लेता।

जद सूरजजी बिसांईजता तद ऐई काम छोड़ता। सरस्वती संभाळता। पछै हाथ पग धोय'र घर री मारग लेता। कदेई कंई चौथटै सूं सघदो लावणो हांवतो तो नंदो वठीनै चलो जांवतो।

रात पड़ी नंदो घरे पूगतो। गधां नै रोही में उछेरतो। लुगायां रोटी पोंवती अर सगळे जीमण लागता।

जीम-जूठ'र मोटियार चिलमिया करता, लुगायां घम्मड़-घम्मड़ आटो पीसती। इत्तैई में पाड़ोसी, आय जांवता। कदेई गप्पां लगांवता, तो, कदेई भजन गांवता। रात मोकळी ढळयां पछै बिना बिछावणै धरतीई लटां दाई ढुड़क जांवता।

नंदो अवधूत हो।

मेह मंड्या नंदो, खेत जांवतो। लुगायां-टाबर निदाण करता। नंदो हळ चलांवतो बीज बांवतो। इण तरै बरस भर खावण पूरतो धान उपजाय'र नंदो पाछो आंवतो।

इत्ती मैनत-मजूरी सूं कमाई करतां थकां पण, नंदो लाडै करजायत ई रैंवतो। कमावतो जिको खाय लेंवता। मरणै-परणै संधीवाळां री गरज करणी पड़ती। चोटी लिखाय'र रुपिया लेंवतो अर सईकै लारै २०) ३०) कटांवतो। भलो होंवतो तो १००) रा ८०) नहीं जणै ७०) ७५) मिळता। इयै मांयसूं ई १) कोथळी खोलाई री अर १) कबूतरां रै दाणै री देवणा पड़तो। अठीनै

नंदौ मैनत-मजूरी करण मैं कसर को राखतौ हौनी बठीनै खंधीवाळा ऊपरलौ-पानौ को श्रावण देंवता हानी ।

नंदौ वापड़ौ करजायत रैंवतौ हौ ।

सैर री दुकाना मैं तरै-तरै री चीजां सजायोड़ी रैवै । नंदै'र बियै रै टाबरां रै भावै तौ कंई को हौनी । वे तौ श्रापरै काम सूं ईज पिरोजन राखता । कदेई श्रांख उठाय'र सामौ जोवणौ किसीक होवै ।

नंदौ साधू हौ ।

नंदौ भणियोड़ौ 'कक्कोई' को हौनी । हिंसाब श्रटकल-पच्चू सूं कर लेंवतौ हौ । टाबरां रै ई काळो श्राखर भैंस बरावर हौ । सैर मैं घणी पोसवाळां-मदरसा श्रर कॉलेज तकातक खुलग्या हा पण इयांरै भावै तौ कंईन का ।

नंदौ ठोठ हौ ।

जद कोई नंदै नै टाबरां नै भणावण री कैंवतौ तद वौ उथळो देंवतौ-म्हांरै भाग मैं ई विद्या लिखी कोयनी । विद्या तौ थां लोगां खातर है । म्हांनै तौ धूड़रा ढिगला ई ढोवणा है ।

कोई कैंवतौ-टाबर भणजासी तो सोरा रैसी, चोखो कमासी चोखो खासी । नंदौ कैंवतौ-म्हे तौ सोगरा श्रर मोटै गाभां मैं ई मस्त हां । म्हानै क्यौं श्रऊरा बोर भावै है ।

नंदौ संतोखी हौ ।



जेसियौ तंबोळी

जेसियौ जात रौ मथेरण हौ। पण कैवता सागळे वैनै तंबोळी हा कारण वै पाना री दुकान खोल राखी ही।

जेसियै री दुकान घणी जूनी अर नामूंजदार ही। वैरै हाथा में जायोड़ा छोरा, छोरां रा बाप, दादा अर पड़दादा वणग्या उत्तै वैरी दुकान धन्नाटै सूं चलती ही।

आज सूं तीस-चाळीस वरसां पैली पानां रौ चळण निराठ थोड़ौ हौ। घणखरा परदेस रैवणिया लोग ई पान खाया करता हा। क्या कई रौ जी दोरौ होंवतौ, खासी आंवती जिकौ मरेटी घताय'र दवा दाखल पान खांवतौ। क्या कोई सौखीन होंवतौ जिकौ पान खांवतौ। लुगायां नै होठ अर जीब लाल करण सारू पान मिळ जांवता जणै वे खिलती-राजी होंवती अर घड़ी-घड़ी काच में होठ'र जीब देखती।

होठ अर जीब लाल करण सारू छोरा-छंडा, लुगायां, गूंदी रा पत्ता खांवता।

जेसियै री दुकान पोकरणां बामणां अर बांणियारी गुवाड़ में ही। बांणिया री वै वेळा क्यौं वात पूछी ही! आधा दीया पाछा आंवता हा। लिखमी ऊंधी होय'र पड़ती ही। जीवना ई सरग रा सुख भोगता हा।

धनवानां रै वियां-सगाई अर हरख-उछाव रै टांकड़ै तथा परदेस री जोयीजती मुसाफरी कर'र पाछा देस में आंवतै ई चौक में चमक थाय जांवती। दिनंगै जीम-जूठ'र सै ढूकता जेसियै री दुकान। चाव सूं चावता पान बीड़ा। दाना पकियोड़ा कपूरी पान खांवता तौ मोटियार अर सौखीन मांगता मीठा अर बंगला। जेसियौ हाट में सगळी भांत रा पान राखतौ-कपूरी मीठा, बंगला, धौवला, अर देसी।

जेसियै री हाट री सामली चवड़ी चौकी माथै चौपट मंडती। सगळां नै चौपट री सौख। सै आय जमता। बीच-बीच मैं—लाव जेसिया पान, लागी रैंवती।

घड़ौ मजौ वणतौ। रस बरसतौ—रंग जमतौ। पौबारै, दस पगड़ी अर चारकाणा रा बोल हवा मैं गूंजता।

सिंज्यानै कोटड्यां-बगेच्यां सूं पाछा आय'र जीम-जूठर सै जमता जेसियै री हाट रै आगै धरियोड़ै पाटै माथै। फेर लाव पान-लाव पान लागती। इसै मौकै जेसियै रै मोकळी कमाई-कजाई होंवती।

पण वैगी ई जांवती परी भांग रै भाडै। जेसियै मैं बिरखा रै सवदै री लांठी लत ही। चोखे रंगबाजां मैं वैरो नांव हो। आभै सामो जोय'र वो फट्ट ई बताय देवतौ कै बिरखा घड़ी-दोय घड़ी मैं आय पड़सी।

मरुभोम मैं बिरखा री कोड मोकळौ है ईज। अठीनै चौमासौ लागतौ उठीनै जेसियै री हाट मैं 'धनवेशण दफ्तर' खुल जांवतौ। आयौ-गयौ, वैंवतौ-चालतौ, सवदैवाळो-अणसवदैवाळो, वडौ-छोटौ, सगळे, जेसियै नै, मे री बाबत मन चाया सवाल पूछता—(१) मे री क्या डौल है? (२) हुवसी तौ घणौ है (३) परवा हवा ई चलै है (४) ऊगतै सूरज रै बारकर जळेरी ई ही (५) चिड्यांई धूड़ मैं न्हावै है (६) आभौ ई रातौ है (७) तीतर पंखी बादळी ई है। जेसियौ कैंवतौ—अबै तौ बिरखा आई ई देखौ।

जेसियाँ रात री ११-११॥ बजी हाट वधांवतौ जितै तांई बिरखा री पूछवाछ चालू ई रैंवती।

जेसियै नै बिरखा री मोकळी ज्ञान होंवतै थकां वी हमेसा खोई मैं ई रैंवतौ। कैनै ठा परमात्मा रै घर री लाई नै क्या फिटकार ही। वैनै पूछ'र लोक तौ कमांवता अर वौ खोंवतौ। घाटै मैं वी बजार जांवणौ बंध कर देंवतौ। कैनै-अबै सवदौ करणौ बंध कर देसूं। मसाणियौ वैराग दोय-च्यार दिन ई टिकतौ, फेर वेई घोड़ा'र वेई मैदान।

जेसियौ हंसमुख अर मिळणसार हौ। सगळां मैं खपतौ : टाबरां मैं टाबर, बडां मैं वडौ। चौक्याळां मैं वौ इसौ घुळमिळ ग्यौ हौ कै लोक

लखाईजतौ ईहौ कोनी। वो गुणी अर बौगुन ही। घर-गिरती रै मामलै मैं लोक वैरी सलासूत लिया करता।

रंग गऊ बरणौ, आंख्यां बिचलै दरजै री, मूंडौ लंबौ, नाक तीखौ, कान टिरियोड़ा जिकां मैं मुरक्यां पैरियोड़ी, भंवारा तीखी काजळ री रेख ज्यौं, कद लंबौ, सरीर पतळौ-दूबळौ, उणियारौ गंभीर, ओछौ-ओछौ चोळौ, गोडा साइनी धोती, माथै माथै अलेटिया-गळेटिया फूल गुलाबिया पागड़ी अर पगां मैं देसी पगरखी।

जेसियौ हाट मैं काजू-काजू जिनस सगळी राखतौ। छोरा-छापरां नै राजी करण री मोकळी चीजां ही। पान, सुपारी, मरेठी, मसालौ, जरदौ-सुरती, हींगास्टक-री गोळयां, पींपळ पाक, गुलकंद री खाटी, पचायोड़ी खारकां, जीरौ, पींपळ, लूणिया-नींबू, पतासा, बिस्कुट, चीकणी सुपारी रा किरका, पोदीणै री टिकड्यां, नींबू रसरी फांक्यां, मैणबत्ती, बीड़ी-सिगरेट, तील्यां री पेट्यां, साबण, मूंगफळ्यां, लिफाफा अर कारट। त्यौंवार-टांकडां ऊपर जोयीजती जिनसां ई राखतौ हौ। दियाळी मैं, छुरछुरिया अर गोळिया पिटाका, टिकडी वाळा पिटाका, नागवाळी टिकड्यां, रंग-रंग री रोसनाई री पेट्यां अर फूलझड्यां।

जेसियौ चतर बौपारी हौ।

रात नै गळी-गुवाड़ रे छोरां नै, किस्ती-भरां रा, सोनै, तोळै रा अर ब्याज रा लेखा घालतौ अर मालणी वचांवतौ।

जेसियौ ईंसाबियौ हौ।

जेसियौ सत्संगी ई हौ। चौकलै रा दाना-बूढा अर भणिया-गुणिया सूं वैरै चोखी गुरबत रैंवती। चोखी ग्यान चरचा चलती। सासतरां री काण्यां अर दंत कथायां ई वैनै घणी याद ही। सुळझियोड़ौ अर दानौ मिनख हौ।

जेसियौ पुण्यात्मा हौ।

चौक रै सऊकारां रा टावर हाट मैं, कोई गैणौ-गांठौ भूल जांवता अथवा कोई सुल-टूट'र पड़ जांवती, तौ जेसियौ वांरै घरवाळां नै संभळाय'र देय देंवतौ।

जेसियौ हाथ रौ साचौ हो।

चौक रा छोरा-छंडा, छोटा-बड़ा, बहू-बेट्यां सगळै जेसियै रौ काण-कायदौ अर संकौ मानता। बराबरीवाळा बैरौ आदर करता। बूढा-बडेरा सनेव राखता। जेसियौ कईनै परायौ को लखाईजतौ हौनी।

जेसियै री हाट खाली पाना री हाट ई को हीनी। वा मनोरंजन-क्लब, सतसंग भवन, रात्रि पाठशाळा अनवेशण दफ्तर, दुख-सुख कैण-सुणन री सैयोगी संस्था अर भळै ना जाणै क्या-क्या ही ?

पाना री दुकानां तौ चौक मैं घणी ई खुलगी पण कठै बा बात ?

जेसियै नै परमात्मा री सरण मैं पूगा नै मोकळा बरस हुयग्या पण बैरी हाट खनै कर नीसरती वेळा बैरी पुण्य मूरती आंख्यां आगै नाचण लाग जावै अर सुख-दुख रै भावां रै मेळ री तरंगां सूं हिरदै मैं एक मीठी पीड़ लखाइजण लाग जावै।

मनजी मचकांवाळो

मनजी लाई जिलम तो पूंजीवाळे अर पूजीजतै घर में लियो हो पण हो भाग आडो भाठो। घर मिनखां सूं भरियो-तरियो हो : पगरख्यां ई मांवती को होनी।

न्यात में औसर-मुकता अर ब्यांव-सगाई ठाठ-बाठ सूं करण सूं, इण परवार री चोखी साख-सोभा ही। औ सगळो मनजी रै दादै रो परताप हो। बो ईज ऊजळो जंवारो अर धनक नांव करणियो हो; बिंयै रै आंख्यां मींचण पछै औ परवार परवारग्यो। कैवत ई है-एक रती बिना पाव रती।

मनजी रै बाप सूधा च्यार भाई हा। च्यारे ई एक बीजै रा सिर खावणा, लखणां रा लाडा, पूरा गईवाळ।

मनजी रै दादै आपरै जींवतै-जींवतै सगळां नै न्यारा किया जणै एक-एक री पांती में पचास-पचास तोळा सोनो, गैणा-गांठा, कपड़ो-लत्तो अर मोकळा बासण-बरतण आया हा। चांदी री थाळयां कटोरयां इण सूं पाखती। न्यारा-न्यारा पक्का घर सगळां री पांती में आया हा। नगद नांणो, एक-एक जणै री पांती में पांच-पांच हजार आयो हो।

पण च्यारूं भाई माया-मत्तां नै देख'र फींगरग्या। घड़णो-घड़णो बांरै कुण घड़तो हो! जूवे रमै, दारूडा पीवै अर पड्या रैवै रांड्या में। थोडा बरसां में माया मारगै लागगी अर खनै बंची नवनारायण री देह।

मजा जिसी ई सजा। बेमारयां-सैमारयां सरीरां नै किणजा कर नाखिया अर दीखण लागा आगला घर। छेकड़ जमराज रै वारंट में जबतै हुय'र जाय पूगा-अदालत में।

मनजी ओर च्यार भाई। मनजी री लाई री आंख्या पांच बरसां री ऊंमर में ई सीवळ में गई परी। भायां में मोमी अर मनजी नै छोड'र थीजा

दोय साधारण घड़णौ जाणै। पण चौलै बाप-काकां रै ई चलै-निखट्टू, जुवारी, दारूबाज।

रोट्यां रा सांसा पडण लागा। आजीवका री जाबक डौळ नहीं। छेकड़ गांवड़ै सूं पग छूटा।

रुळता-भटकता पूगा बीकानेर। अठै मैनत-मजूरी री कमी नहीं। मोभी जेसी, कदेई फंदोयां री मजूरी तौ कदेई ठाठै री मजूरी जावै। बीजां दोय भायां दुकान खोली। एकतौ वे कंई घड'र न्याल करण जोगाई को हानी अर बीजौ अणसैंधा होवण सूं लोग धीज-पतीज करता को हानी।

पण लाई मनजी मैं कोजी बीती। आंख्यां री आंधौ करै तौ क्या करै? छेकड़ उपाव काढ़ियौ। रात नै लोगां रै मचका देवण जावै, तेल मालस करै। घंटै रा आना दोय लेवै। घणी रात तांई भूत दांई भटकै।

चौक'र गळयां मैं ऊँचक-नीचक जागा, खाडा-खोचरा, आखळ्यां कुत्ता-बिल्ला अर गाय ढांढा बैठा रैता पण मनजी तौ रागोलिया करतौ डांग रै सायरै निधड़क निकळ जातौ। आंधै री राम रुखवाळौ। भगवान री दया सूं मनजी री मांयली आंख्यां खुलगी ही।

लोगां नै दो आना मैं दो मजा मिळण लागा-पगचंपी अर सत्संगः प्रायक बधता गया। गुजारौ चोखौ होवण लागग्यौ।

मनजी री बारली आंख्यां मींचीजियोड़ी पण मांयली खुल्ली ही।

मनजी मचकांवाळौ हौ।

ऊनाळै मैं, गळी-गळी मैं लोग लुगायां घर री चौकी तथा पाटै ऊपर मनजी रा भजन सुणन सारू सूती-बैठी रैती। मनजी खनै मचका तौ एक-दो जणा दरांवता पण भजन सुणावण वास्ता सगळे वैनै कैंवता-फलांणौ सूर री पद, फलाणी कबीर री साखी सुणा कोई रूपादे वाळौ सबद-'मलजी हुय जावौ संत सुधारौ थांरी कायारे' गावण री कैतौ। कोई सुखी राम री भजन 'हलकारा खड़ा सिरकार का क्यौं नींद नसै री सोवै, कागद नै तू कठै लुकोवै' कोई बूढापा वैरी कद हुवैला थारौ छूटबौ' गावण री कैतौ मनजी सगळां री मन राखतौ।

मनजी सतसंगी अर मैनती हौ।

चारे भाई भेळा रैवै। मोभी सूं छोटै भाई नै परणावण री मनजी रै जची। रोट्यां रा फोड़ा पड़ै जिके तौ मिटै। पण भाग में सुख किठै ? कंई रात री कड़ी खाटणी रा पइसा अर कंई चोटी लिखाय'र, मनजी भाई रतनै री व्यांव कर दियौ।

मनजी खरौ फरजमंद हौ।

रतन-नांव रौ चोर, खोटौ काचरौ टुकडौ निकळियौ : दुकान-फुकान कुण जावै। आखौ दिन जूवै रमै। कदै कुंई कमाय लेवै तौ दारूड़ा उडावै। मोभी अर मनजी ऊपर ऊंधै घटोलियै सूं मूंग दळै। किणी भाग फूटोडै घडणी दियौ तौ सोनौ-चांदी वेच खायौ। मनजी नै रुपिया भरणा पड़िया-'भाभी नीपती जाय कौड़ी खेल तौ ई जाय'।

मनजी जरणावाळौ हौ।

रतन रा रोटी कपड़ै सूं जतन राखतै थकां वौ कोजी लतां री लपेट में आय'र एक दिन लंबौ हुयग्यौ। जींवतौ ई राखस हौ, दारू पी'र वहू नै कोजी तरै मारतौ। कणौ ई बैरौ तिणखौ, बींटी तौ कणै ई बोरियौ तोड़ ले जांवतौ। आप मरियौ अर बैनै ई मरण जोगी करग्यौ। छेकड़ बाई मनजी नै छोड'र, छैंयासी सं छूटगी।

मनजी उदार'र उपगारी हौ।

फेर मनजी नै ऊंधी सूझी। अबकलै बिचलै बीरै नै परणावण'री जची। देखियौ कदास टुकड़ा सेकण सूं पिंडौ छूट जावै। पइसौ माथै कढ़ायौ कुंई घर सूं भेळियौ। मनजी री तौ देवाळौ पीटीज ग्यौ पण भाई सुगनौ भिडीज ग्यौ। वौ ही खोटौ रतन तौ औ ही असुगनौ-पक्कौ मनहूस ऊंधै घटोलियै सूं मूंग दळणियौ। केई दिन भेळौ रै'र न्यारौ घर मांडलियौ।

घड़णी कंई घड़'र न्याल करै ? आखौ दिन जूवै रमै अर चिलमिया चेतावै। घर में अन-दांतै वैर। मनजी री नांव लेय'र थानै-म्हांनै ठग लावै अर मौज उडावै : लुगाई टाबर आपरी करणी।

मनजी सूं आ देखीजी कोयनी। वौ भौजाई-टाबरां नै ले आयौ। दाढ़स बंधाय'र कयौ-भौजाई रो मत। अठैई भेळा रैवौ।

दोय-च्यार दिनां छेड़ै पापी सुगनौ कजियौ करणनै आय ढूकौ। मारण लागौ लायण लुगाई नै। मनजी समझावण लागौ जणै लुगाई नै छोड'र थेरै ऊपर हाथ उठावण लागौ; मनजी मैं ही आंधौ जोर। उठाय'र पटकियौ अर बैठग्यौ छाती माथै। जणै हाथ जोड'र कैवण लागौ-अबै इयां कदे ई को करूनी। मनजी कयौ-बडौ भाई जाण'र कित्ती बार गम खाई है। अबकलै म्हारी मा समान भौजाई ऊपर हाथ उठायौ तो मनै जाणै ई है।

सुगनौ कपूत तौ होई पण कपूर बण'र मनजी नै फेर दुख देयग्यौ। किणी मनजी नै कयौ-थारै औ जंजाळ फेर घटतौ हौ। मनजी बोलियो-सै आपरै भागरौ खावै है, कुण कई नै खुवावै है। ठाकुरजी टाबरां रै भागरो मोकळौ देसी।

मनजी विवेकी हो।

एक बार मनजी डांग रै सायरै काम जाय रयौ हौ। मारग मैं ऊभौ हो'एक मारणौ गोधौ। चई मारी अर घाल सींगां मैं'र आघौ उछाळियौ। हाड़ खळकीजग्या अर पोताळां मैं घणी चोट लागी। बडौ भाई लाई नै एकै मैं घाल'र बडोड़ी असपताळ लेय ग्यौ।

पांच महना तांई बठैई पड़ियौ रैणौ पड़ियौ। दिन-रात भजन चूंचावतौ। भजन रै परताप सूं असपताळ रा हिरदै होण अर फुरुनीवाज सेवकां रै मन मैं दया वापरगी। वे मनजी री पूरी साळ-संभाळ राखता।

एक दिन एक जणै पूछियौ—मनजी भायला, काल कंई आखर खुलसी रे? मनजी कयौ-मनै कंई ठा भाई? वौ बोलियौ—म्हारै तौ सातौ जचै, सुपनै मैं एक सरप देखियौ हौ। मनजी कयौ-ठाकुरजी चावै तौ आय जावै। दूजै दिन सातौ ई खुलियौ। अबै तौ असपताळवाळा वैनै सिद्ध कैवण लागग्या। मनजी बोलियौ-हूं कांयरौ सिद्ध हूं। हूं तौ निद्ध हूं, कपूत हूं, पापी हूं। भगवान नै भूलियोड़ौ-भटकियोड़ौ हूं। म्हारौ किठै छूटकौ होसी?

कोई सतसंगी सुख पूछण गयौ जणै मनजी कयौ-ठाकुरजी करी सो चोखी ई करी। नहीं जद वैनै याद करण री टैम ई किठै मिळती? आ कैतौ-कैतौ वौ गळगळौ हुयग्यौ अर पांच-सात वार मंढै सं हरि-हरि जपण लागौ।

आगै बोलियो–भाईजी ! एक दिन तौ सुपनै में जमराज रा दूत लेवण नै आय ग्या हा। मनै क्या सुख हैं, पण मरणो चायो नहीं । इत्तै में ठाकुरजी रा दरसण हुया–मनोहर रूप, मोर मुगट धारण नै एक हाथ में वंसी। ठाकुरजी मुळकिया अर कयौ-मनजी घवरा मत। म्हारो भजन करतौ रै। हूं तनै अबार मरण को दूंनी।

मनजी भगत हो। डागदरां तौ छुट्टी देय दी पण इलाज पूरो हुयौ नहीं। मनजी रै कुण पट्टी-पोळी बंधावण खातर असपताळ जांवतौ रैवै। एक दिन इसी जची जिको कई री बतायोडी देसी दवा बजार सूं ले आयौ। बैसूं तर-तार फायदौ होवतौ गयौ अर कई दिना में पूरी तरै सूं ठीक हुयग्यौ।

मनजी बेमारी सूं उठियोडौ, खनै पइसौ नहीं। एक दिन चौक रै पाटै माथै बैठौ उदास हुयोड़ौ माळा फेर रयौ हो। सुस्ती अर थकावट सूं आंख्यां इसी घुळी जिको बठैई गुड़क कर गुड़दापेच हुयग्यौ। सुपनै में ठाकुरजी कयौ-उठ, थारै सिरांतियै एक कागद री पुड़ी लाधसी। तनै जोयीजै जित्ता पइसा बैमें मिळ जासी।

आंख खुली तौ साचै ई सिरांतियै पुड़ी पड़ी। बै में मोकळी रेजगी ही। मनजी भीज्योड़ी आंख्यां सूं भगवान नै नमस्कार करी। रेजगी गिण'र, मनजी आखर बाय दियौ। दिनूगै रुपिया आय पड़िया।

मनजी इस्टी हो।

कई दिनां तांई मनजी रै जचियोड़ो आखर ऊगतौ ई रयौ। पिरसिधी होवण लागी। लाळ लागगी, धूपाड़ियो सबदौ करै।

रात नै लाई आधी रात तांई हाड़ भांगै, दिनूगै सबदौ इयैरा गोडा भांगै, बायौ कित गयौ न आयौ। मनजी सवदागर हो।

माथै मोकळा देणा कर लिया। माया रै चक्कर में चढग्यौ।

एक जणै कयौ–मनजी, औ क्या कियौ रे डफोळ ? जणै आंसूं काढ़'र माथै में तड़डौ लियो। कैयो-माया लारै परमू नै विसरग्यौ। अबै लत छूटणी औखी हुयगी।

मनजी नै आपरी करणी ऊपर पछतावौ हो।

— २३ —

पौरायतणी-मदियै री बहू

आधै सईकैसूं पैला री बात है। पिरजा में पराधीनता री भावना घणी ओछी ही। लैण-दैण, बौपार-बट्टै में असरची पड़ जांवतो तोई लोग कचेड़ी री पराधीनता भोगणी को चांवता नी। पंच घाल लेंयता जिके दोनां नै सळटाय देंवता। कैवत है—'राज री तेड़ो नहीं आवै जम री भलां ई आय जावै।'

लोग चौवटै सूं धान-चून, तेल-लूण लांवता तौ डीले। कूवै सूं पाणी लांवता तौ डीले। लुगायां आटो पीसती तौ डीले। गळी-गुवाड़ री परबंध करता तौ पांच जणा मिळ'र। राज री मूंडौ को तकता नी। मरणै-परणै पांच भाई चलाय'र हाजर हुय जांवता अर काम-काज सळटाय देंवता। पंचां री बात परमाण मानीजती। पंच इसा जिकै झुकतै पाळणै रा सीरू नहीं—परायौ हित पैला आपरो पछै देखता। पाखंड-परपंच घणौ ओछौ। माईतां री परणाळ का ऊपर चलनौ पण आंख्यां खुल्ली राख'र। प्राणी पांचवान अर पुरसारथी। परायौ नरग निचोवणौ पाप जाणता। पुड़ी-पुड़ी रै मिनखां नै पळोटता-परखता। सैंयोग अर सायता री भावना भरियोड़ी। पोथा भणता-वाचता तौ जी लगाय'र पूरै परिसरम सू। मोथा-थोथा को रैंवतानी, भलांई आखर-आखर पूछ लेवौ। जणै पिंडत कैवांवता—पूरी पढ़ाई रै ताण। परिख्यायां री पराधीता सूं परै रैंवता। पराई भासा परायौ भेरेस सू परै रैंवता। पराई भासा पढ़ता ई तौ मन अर माथौ परायौ को करतानी।

ठोड़-ठोड़ सगळा मानीजता-पूजीजता। घिरणा अर ऊंच-नीच री भावना घणी ओछी। परसेवै री कमाई नै आछी जाणता। पाप, पाखंड अर पचेडां सूं परै रैंवता। क्या-क्या गिणावां क्या-क्या बतावां?

आपरी पांच भूतां री काया अर संचियोड़ी माया री परबंध हाफे ई करांवता। पोलस रै परवस नहीं।

हां, तो इसी परबंध बांध राखियो हो के रात नै पौरायतिया गळी-चौकां मैं पैरो देंवता। पोलस री पंचायती को हीनी। पौरायतियै रै रोटी-कपड़ै री परबंध गळी-गुवाड़वाळा करता।

इसी सुणनै में आई है के पछै पोलस पैरो देवण लागगी। तोई पौरायतिया चलता रैया। पण पोलस धमकी दीवी कै पौरायतियां रै पौरै मैं, कदास, चोरी-चकोरी हुई तौ पोलस जिम्मेदार नहीं वणैला। जणै औ परबंध पराये हाथां गयौ। पौरायतियां री पौरी बंध हुयो।

पैला, रुपयै में, पनरै आना, लोगां रा घर कच्चा हा। होळी-दियाळी वे दड़ीजता-लेसीजता अर पोतीजता। पण औई काम लुगायां खुदोखुद करती। हाफेई रोही मांय सूं गुड लांवती। फोटां री काळ को हौनी आज दाई घर-घर गायां ही। फोटा अर छाणियोडै मुड़ सूं दड़ा दरीजता-लेसीजता।

पछै आंवली रंगाई-पोताई री वारी। इण खातर ई पराये मसालै अर परायै हाथां री परवसता को भोगता नी। पौरायतणी धौळी-लाल मिट्टी खारोटिया भर'र पूगाय देंवती अर घर री लुगायां हाफेई घरां री पोताई कर लेंवती।

मदियै री वहू म्हांरी गळी मैं धौळी-लाल मिट्टी जोईजती जित्ती पूगाय देंवती। दिसा रा हाथ धोवण सारू पीळी मिट्टी ई लाय नाखती।

मदियै री वहू पौरायतणी ही।

वैरी ऊंमर साठा रै अड़ै-गड़ै ही किरड़कांटियौ सरीर पण तांत करारी, काळी वरण, छोटी-छोटी आंख्यां, चैरै माथै सळ पड़ियोड़ा, ओछौ लिलाड़, धौळा धक्क विखरियोड़ा केस, सरीर माथै बोदी कसांदार अंगरखी पैरियोडी, या फाटी काळी ओढ़णी ओढियां अर पगां मैं फाटी फीड़ी पगरखी पैरियां राखती।

माथै खारोटियो धर'र, वा बिरत रै घरां में मिट्टी पूगांवती। वैरी जागा वैरी ई काण-कायदी हो। छोटा, दादीजी, नानीजी कैंवता। बडा आदर सूं बतलांता। साईना, साईना-दाई बोल-वतळांवता।

मिट्टी पूगांवती जिकै दिन एक सापती रोटी मिळती। दाळ-साग हाजर होंवती तौ बोई घालता। बारै महीना मैं उतारू गाभा देंवता। टांकडै-तिंवार माथै रीत मुजब धान देंवता। कदेई वा कई सूं ना तौ चिड़-भिड़ती अर ना ई घणी-थोड़ी कैंयती।

मदियै री वहू संतोसण ही।

मरणै-परणै मैं नेग मुजब थैनै ई कंई दे दिया करता। वा राजी होय'र लेंवती अर आसीसां देंवती वधोतरी मैं।

मदियै री वहू भोळी-डाई लुगाई ही।

आडै दिन नितरी सिंज्या नै वा गळी मैं आंवती अर घर रै आगै ऊभ'र हेलौ पाड़ती—'अड़ोई देयो मां-बाप।' थैरी मीठी बोली सुण'र टाबरं हरखांयता, आधी रोटी थैनै देयण दौड़ता। टाबरां नै आया देख'र वा घणी राजी होंवती। टाबर थैनै—लौ दादीजी, लौ नानीजी कैंयता जणै थैरी जी सोरी हुय जांवती।

मदियै री वहू सुवावणी ही।

मदियै री वहू नै मरियां जुग-जमारा हुयग्या। म्हे लोग टाबर हा, जणै वा आंवती ही।

पण हाल तांई थैनै म्हे भूल गया होवां इसी बात कोयनी।

बींजो खाती

बींजो ढळती ओस्था री ही। ओळो सामणो, दाढ़ी अर केस करड-कावरा, पक्को रंग, लिलाड़ माथे रामदेवजी री रिख्या लगायोड़ी, आंख्यां छोटी-छोटी, कान टिरियोड़ा, जाडा भंवारा, पैरण नै एक बंडी, खांधे माथै रेजी री अंगोछो, लट्टै रो ऊंची-ऊंची धोतियो, माथै दमालो पागड़ी-गट्टी जिकै ऊपर काळी ऊन रै जाड़ै डोरै मैं पोयोड़ा रामदेवजी रा पगलिया बंधियोड़ा, पगां मैं खुडा-खांच देसी कारयां लागोडी पगरखी, बींजै खांधै एक जाड़ी मैली झोळी लटकायोड़ी जिकै मैं जोयीजता राछ-वसोली, रंदो, करोती, छीण्या, हथोड़ो अर सार।

बींजो खाती हो।

म्हारी गळी मैं बींजो हफ्तै मैं दोय वार तो आंवतो ईज। बैनै संतसंग री सौक़ ही। म्हांरी गळी मैं पाथरीई बावैजी रतनलालजी रै घरै जाय ढूकतो। रतनलालजी री सोजी गई परी ही अर गंठियै रै कारण टुरीजतो-फिरीजतो को होनी। वे घर मैं ई ठाग लाधता।

बींजै नै आयो जाण'र रतनलालजी घणा हरखता, पाणी री मिनवार करता। पछै दोये जणा दो बोरयां माथै आमा-सामा बैठ जांवता। ज्ञान-बैराग री चरचा छिड़ती, होळै-होळै सबद गाईजता। दोये जणा इसा मस्त अर लीन हुय जांवता जिको दीन-दुनियां री सुध ई को रैंवती नी।

सिंज्या पड़ी बैगीई रतनलालजी री वहू बेसण सेक'र बेढ़यी पूड्यां तळ देंवती। दोये जणा जीम लेंवता। पछै बींजो माडोणी घर री मारग लेंवतो।

बींजो रोज नेम सूं रामदेवजी रा दरसण करण जांवतो। बांरी घणी मानता राखतो। रोज पखाळ करांवतो, धूप लेंवतो। घणी वार जम्मो दरांवतो। बांरै इग्यारस रै दिन नारेळ वधारतो, सीरणी चढ़ांवतो-बांटतो।

दोय जणा भेळा हॉवता जणै बींजो भगती भीजर कैंवतो–बलिहारे, बाम्रै रै परचां री क्या-क्या बात कैवूं। फलाणै आंधळै नै बाम्रै आंख्यां दीनी, फलाणै पांगळै नै पग, फलाणै कोढ़ियो रो कणक झड़ायो। बाबो हाजरी हजूर है।

बींजो भगत हो।

बींजो, मांचा सालतो, घट्टी री पाथो-मकड़ी करतो अर बींजो खोटवों काढ़तो। कदै ई जच जांवती तो घट्टी टांच ई देवतो। देनगी री रूण उण दिन एक रुपयो हो बींजो ई इण सूं ओछो को लेवतो होनी।

रतनलालजी रै घर में ई काम पड़तो, तो ई, रुपयै सूं ओछो को लेंवतो नी। मुलायजै सूं जीम भलाई जांवतो।

म्हांरी गळी-गुवाड़वाळां सूं बींजो घणो मीठो बोलतो, ज्ञान वघारतो। आधै-चौथाई दिन में होवण वाळै काम में बो तो पूरो दिन लगाय देंवतो। जणै कैंवता-इत्तै सै काम में दिन पूरो करदियो जणै उथळो देंवतो-कामनै तो टैम लागसी। म्हारै सूं नहीं पतीजो तो आगै सूं बींजै नै बुलाय लिया करो। अबेलोई ओछो लेवण नै राजी को हॉवतो नी। ज्ञान-गोचर में, बो जित्तो सैणो हो, आपरै मुतलब में, उण सूं ई, सवायो सैणो हो।

म्हांरी गळी में, बरसां सूं आंवतो, सगळां सूं सैंध-पैंचाण हुयगी ही। मेळजोळ बधग्यो हो। पण क्या मजाल जिको कईं री मुलायजो राख देवै।

गळी में एक जणै रै बेटै री ब्यांव हो। जान में बो बींजै नै मेळ-मुलायजै सूं जीमावण लेयग्यो। सगां रै घर सूं दोय नारेळ दराया। ब्यांव रै घर में थोड़ो-घणो खोटवों रैवै ई-। तो वै बींजै नै काम भोळाय दियो। बींजै तो मेळ-मुलायजै नै ऊंचो मेल'र झट ई एक रुपियो दानगी री मांग लियो।

बींजो मुतलबियो हो।

बींजो अर रतनलालजी आज दोये परलोक सिधार ग्या। पण कदे ई गळी में कई खाती नै आयो जोय'र, बींजै री याद आय ई जावै। दोय छाया चित्तर, आमा-सामा बैठा ज्ञान चरचा करता, आंख्यां आगै आय जावैः एक स्वार्थी अर बीजो परमार्थी रो।

सिणगारी सैंसण

सैंस्यां री जाती पैला तौ उठाऊ चूला'र अपराधी गिणी जांवती ही। सायद पोलसवाळा इयांरी निगराणी राखिया करता हा।

औ उदबुदा जीव है। क्या बोली सूं क्या पैरेस सूं। इयां री रैण-सैण अर रीत-रवाज न्यारै ई ढंग रा है। औ निरदई अर अंत लोभी हुवै है। अडै-खडै में, एकल-दोकल नै औ लूंट-खोस लेवै अर मार ई नाखे। दुरगुण तौ इयां री नस-नस में भरियोड़ा है, गुण कोई होवै तौ भगवान जाणै। इयां री लुगायां इयां सूं घाट कोयनी। इयां रै माथै बांधण जोग्यां ई है। तेलण सूं नहीं मोचण घाट वैरी मोगरी वैरी लाट।

औ लोग आदू सूं किठै सूं उठिया, किठै-किठै रैया, किसी इयां री बोली है, किसी जात है, किण-किण भेळ सूं आ बणी है, इण रो पतौ तौ जात्यां रै निकास-विकास री खोज करणियां नै ई लाग सकै। आपां नै इयै खटपटै सूं क्या पिरयोजन ?

सैंस्यां री जात मांगणी है। घर में चूलो बाळण री तौ इयां नै सौगन है। दुनिया खावण-पीवण सारू कमावै है तौ औ भेळा करण सारू। खावण-पीवण रै खरचै री चिंता-फिकर ई तौ मिनखा नै गिचाय-थकाय देवै अर टिकाय देवै गोड़ा। वे चिंता सूं चींथीजियोड़ा रैवै है। कैवत में ई कयी है'कः-

भूल गयी रंग-राग भूलगयी छकडी।
तीन बात याद रही तेल-लूण लकड़ी॥

पण सैंस्यानै तीना री चिंता रैवै कोयनी। जणै ई ढूंठ-रा-ढूंठ बणिया डोलै है। किठै ई जीमण-जूठण हुवै तौ कागलो अर सैंसी तौ उठै पूगै ई। कागलो उडायां तौ उड जावै। औ जमै जिको इसा जमै कै बिना कंई लीया इयां नै जमराज ई उठाय ले जावै तौ भलांई माड़ाणी ठोड़ छोड़ै।

सरम-ह्या, मान-अपमान, तौ जुगां सूं इयां री आंख्यां अर मनां सं फरलंग हुय चुका। तौ इयां खनै जमा-पूंजी ई मोकळी हुवै। कैव्रत में कयौ है—'धन तौ सैंस्यां खनै घणौ हुवै।'

छोरा-छंडा, टाबर-टीकर, मिनख-लुगायां, तबला अर मैला-गिंदा कटोरा लेय'र लोगां रै जीमण री वेळा सूं थोड़ा पैलाई घरां सूं उव्हर जावै। आखौ दिन गळी-गुवाडां में गोता खावता फिरै। भलांई इयांनै फटकार दौ, ललकार दौ, धमकाय दौ, अठै तांई लकड़ी उठाय लौ पण अै वदा तौ इसा नकटा-सुरड़ा हुवै कै खिसकै ई कोयनी। कंई दियां सू ईज इयां सूं पिंडौ छूटै। इसा वदमास जिकौ मूंजोरी न्यारी करण लाग जावै अर काढ़ण लाग जावै गाळ। टाबरां नै ठगण सारू लकड़ी रा डेडरिया अर पूर री दड्यां राखै।

तौ सैंसण सिणगारी म्हांरी गळी में नित री फेरी देय जांवती। लंबी तड़ंग, काळौ-कोजौ उणियारौ, चूंखा विखरियोड़ा, फाटा गाभा, फाटौ ओढ़णौ, पीळा हुळक दांत, फोटै दाई नाक, बड़ी-बड़ी ह्या-दया वायरी आंख्यां उभराणा पग, गिरियां सूं ऊंची कांसी री कड्यां पैरण नै एक हाथ में घोचौ अर बीजै में मैली-गिंदी कटोरी। फलाणै री मां, फलाणै री दादी, फलाणै री नानी—म्हारी ई सुणाई कर ए। कंई घाल ए वडभागण, कैय'र घर आगै अड़ी कर'र ऊभ जांवती। टाबर रौळौ सुण'र बार निकळता जणै बानै पूर री दड्यां देखाय'र लकड़ी रा बाजणा डेडरिया वजाय'र कैंवती-रोटी ला भाइया रमतिया देसूं। सुणाई होंवती कमती देखती जणै फेर वडंग मारती—ए घाल ए भाइयै री मां, थारै भाइयै री हजारी ऊंमर करै—थारौ सुवाग वधै। इण सूं ई पार नहीं पड़ती जणै गावण-नाचण लाग जांवती। अपजोडिया सूगला गीत गांवती :—

हाए, कै लिछी थारी गोळ पिंडियां
गोळ पिंडियां, गोळ पिंडियां हाए
जोबन झोला खाय चिमूड़ी
मार फटकारौ थारै जोबन रौ
मार निजारौ थारै नैणां रौ।

नाचती-गांयती जणै छोरा-छंडा भेळा हुय जांवता। ताळयां वजावण लागता। कोई-कोई वडाई वार निकळ आंवता। नाच-गाय'र सागी ई सभोग देंवती–ए लाए भाइयै री मां, थारो चूडो अखी रैवै, सुवाग बधै। ए घाल ए कोई वासी-कूसी टुकड़ो। ए दे ए वडभागण हाथ रो ऊतर।

इयां गळी में राफड़ घालती जणै घर-घर सं रोटी-टुकड़ो मिळ जांवतो। जणै मांगती दाळ-साग। पछै पिंड छोड्ती।

ओसर-जीमणवार होंयती जणै कनाथ रै बार ऊभी रैंवती। टावरां नै रमतिया देखांवती, डेडरिया बजांवती। कैंयती-ऐंठ घाल मनै, रमतिया घणा देसूं। जितै जीमण उठतो नहीं उत्तै वा खेळो छोड़ती नहीं।

ब्यांव-सावै, मरणै-परणै, वा घर री खेळो छोडती ई का हीनी। घरवाळा वैसं उथप जांवता पण वा का उथपती हीनी।

इमें तो सैंसी-सैसण आवणा घणा ओछा पड़ ग्या। कोई कदेई भलां ई आय जावौ। हां, जीमण-जूठण ऊपर तौ हाल ई कागला चूकै तौ औ चूकै।

· इणै कई बरसा सूं एक दिन सिणगारी म्हांरी गळी में आई। घणी बूढ़ी हुयगी ही। बतायौ हूं परदेस गयी परी ही। बडी-बूढ़ी लुगायां बैनै देख'र हरखी, वैं सं बातां करण लागी। दुख-सुख री पूछण लागी। चलाय'र घर-घर सूं बैनै रोटी दी, दाळ-साग घालियो। वठै ई जीमाय'र बैनै ठंडो पाणी पायौ। देख'र घणी इचरज हुयो अर मन में विचार उठियौ कै ममता ई किसीक चीज है।

पछै तौ फेर सिणगारी नै देखी ई कोयनी। मोकळा बरस हुयग्या। इमें तौ मरईगी दीखे है।

चोखी-कोजी, सुवावणी-अणखावणी घटनावां मनां ऊपर किसौक हळकौ-फीकौ असर छोड जावै है जिको सिमरती में लंबाण तांई धूंधळी-धूंधळी बणियौ रैवै है।

— २६ —

बालौ सामी

बालौ सामी नित नेम सूं, सिंज्या नै, म्हांरी गळी में आया करतौ। लंबौ खामणौ, अध मिचली आंख्या, धौळा केस, वडी मूंछा, लंबी दाड़ी, चवड़ो चंनण चरचियोड़ौ लिलाड़, जिकै ऊपर च्यार रेखावां कान टिरियोड़ा, माथै धौली पागड़ी, पैरण नै चोदौ ढीलौ चोळौ जिकै रै ऊपर एक धौळौ चदरौ ओढियोड़ौ दोनां वगलां में च्यार झोळया लटकायोड़ी, गोडां साइनौ धोतियौ, पगां में देसी जूती अर हाथ में एक लंबी लकड़ी जिकै रै माथै लोरौ एक जाळीदार पौलौ, जिकै सूं लटकती एक सांकळ।

घर में वडतौ ई, बालौ, जै गोपाळजी री कैंवतौ। जणै घर मांय सूं कणै ई गंवारी तौ कणै ई बाजरी री रोटी, कणैं ई आटौ घाल देंवता।

टाबर, बालै नै झूम जांवता। कैंवता—बाबाजी छुट्टी दौ-बाबाजी छुट्टी दौ। पैला मनै, पैला मनै, कैय'र आपस में लड़ता-झगड़ता। जणै, बालौ, छोरां रै हाथां सूं पोलै सूं लटकती सांकळ छूवाय देंवतौ। सगळां नै राजी कर'र चल धरतौ।

बालौ बाजरी री'र गवां री आटौ, गवां री अर बाजरी री रोटयां, न्यारी-न्यारी झोळयां में घालतौ।

बालौ गोपळजी रै मिंदर रौ झोळी फिरणियौ हौ।

बालौ अर वैरै घरवाळा गोपाळजी रै मिंदर में सेवा-चाकरी करता। बासी फूस बारी काढ़ता, पाणी भरता, मटक्यां छाणता, गायां नै चरांवता-पांवता, चाटौ देय'र दूध दूंवता, तुळसीजी नै सींचता, मैतजी री रसोई करता अर चौवटै सूं सवदौ-सूत लाय देंवता। इणरै वदळै में वांनै झोळी री मोकळौ आटौ, मोकळी रोटयां नितरी मिळ जांवती। तिंवार-टांकड़ै, जीमण-

जूठण ऊपर गोपाळजी रौ कांसौ पुरसीजतौ जिकै मांय सूं मैतजी थोड़ी जिनस राख'र बाकी री, बालै नैं देय दंवता।

आ बात को हीनी कै बालौ अर बै रै घरवाळा मिंदर री रोटयां ऊपर ई जी जमाये बैठा रैंवता। पसवाड़ै बीजी ई मजूरी करता।

बालौ माचा बणतौ, निवार रा ढोलिया बणतौ, छपरा छांवतौ। चोखी मजूरी कर लेंवतौ, बेटा ई सेठा रै अर राज मैं नोकरी करता।

बालौ अर बैरौ परवार पक्को मैनती हौ।

बालौ मिठ बोलौ, भलौ अर मिळणसार हौ। घर मैं ई सोरौ हौ। सगळे बैसं राजी रैंवता बौ, सगळां रौ मुलायजो राखतौ अर भोळायौ काम कर देंवतौ।

बालै नै परलोक पूगियां नै मोकळा बरस हुयग्या। हाल ई जद गोपाळजी री झोळीवाळौ सिव्या नै आवै अर टाबर बैनै लट्टू'ब जावै जणै बालै री पुराणी याद आये बिना का रैवैनी।

तेजौ सोनार

तेजै री ध्यान श्रांवतै ई एकवार तौ काळजै मैं हूक उठण लाग जावै। जी कळमळावण लाग जावै।

एक दिन लाई झल्लां-पट्टां मैं ही, खनै दो पईसा हा अर ही साख-सोभा। पण एक दिन इसौ आयौ जिकौ खावण नै टुकड़ा ई मिळणा दोरा हुयग्या। तीजोड़ी यूढी वहू लायण वाणियां रौ सोरसौ करती, चौकौ वरतण करती अर दो पइसा लांवती। अठीनै तेजै रै एक तौ दिनां रै फेर सूं घड़नौ आंवतौ ई को होनी। रुळियौ-खुळियौ काम आंवतौ जिकोई वैसूं पार को पड़तौ होनी। कारण सोजी मंद पड़गी ही अर बैठकयाजी इत्ती हो का सकती होनी।

करमां रौ चक्कर इसौ जोर सूं चलियौ जिकौ लाई तेजैनै चकरडंडी चढ़ाय दियौ। जिकी गळी मैं बौ जवान सूं वूढ़ौ हुयौ, वा गळी ई छूटगी। वीजी श्रण सैंधी ग्वाड़ मैं जाय'र बसणौ पड़ियौ। जूनी गळी रौ तौ ईंट-ईंट भाठौ-भाठौ सैंधौ हौ। नवी जागा, सगळी बातां नवी। नवा उणियारा नवौ वौवार। घर मैं खावण रौ कसालौ ऊपर सूं सोजी मंद। भूख तौ दोयां वखता लागै। पण भूवाजी सासती घर मैं ई बसै। भूख'र भूवाजी मैं माईत-टाबर वाळौ नातौ।

लाई तेजौ सारी तरै सूं खपरखूंद हुयग्यौ। जणै एक विध बैठाई। लुक'र रेलघाट जांवतौ परौ। उठै मजूरी करतौ। सिंज्या तांई आटै-लूणवाळा पइसा कर लांवतौ। पण सरीर अकड़ जांवतौ जाणै डांगां सूं कूटियोड़ौ हुवै लाई कद मजूरी करी ही दिन वदळै'न मजूरी करै।

अभाग कैवै—हूं तनै समूळौ ई गिट जाईस।

कंई मजूरी कर'र आप, तौ कंई वहू सोरसौ कर'र लांवती जिकै सूं चेपौ-चापौ चलतौ हौ।

पण एक बात इसी हुई जिकी मरियै ऊपर फेर लात लागी। एक बिणयाणी तेजै री वहू नैं सोनै री जिनस चोरण री चोचौ लगाय दियौ। पोलस आई। डोकरी नैं जबतै कर'र कोटवाळी लेयगी। लायण रोय-रोय'र कैवै-मैं चोरी करी कोयनी बापजी, पण कूण बैरी सुणै।

तेजै नै ठा पड़ी। लाई-रोंवतो-बिलखतो जूनी गळी में आयो। गळीवाळा दाना-बूढ़ा कोटवाळी गया। तेजै री वहू री खातरी दीवी अर जमानत देय'र छोडाय लाया। दोनू जणै लाख-लाख आसीसां दीवी।

पोलसवाळां गरीबणी नै इसी कूटी-इसी कूटी के अधमरी करदी। केई दिनां तांई मांचै सूं उठीजियौ ई कोयनी इयै बात रौ तेजै रै हिरदै ऊपर घणौ गैरी असर पड़ियौ। पण जोर क्या वटै ? बैनैं मजूरी ऊपर तौ गयां ई सरै, नहीं जणै टुकड़ा किठै सं मिळै। दोय तौ आप, एक लाई अभागो छोरौ।

छेकड़ तेजै रै जंवाई—बेटी री सोक रै धणी, नै ठा पड़ी। बौ आयौ अर छोरै'र डोकरी नै गांव लेयग्यौ। तेजौ, तौ, जिचै खूट ग्यौ हौ।

इण घटना नै देख'र मन मैं विचार उठियौ कै कदास, सोनारां री कोई संघ बणियोड़ो होंवतो अर हरेक सोनार, कमाई मांय सूं रुपियै लारै, पाई-पईसो संघ रै फंड में जमा करांवतो होंवतो, तौ, तेजौ, कुत्तै री मौत को मरतो नी। सोनारां री पंचायती तो है पण बातो कई नै न्यात बार कर देवै, कई खनै डंड भराय लेवै अर कई री होको पाणी बंध कर देवै। इसी, जड़ री बात माथै, पंचायती री ध्यान ई क्यों जांवतौ हौ। खैर छोडो।

तेजौ सोनार हो। चोखा दिन देखिया हा। मोकळौ घड़णो आंवतो हौ। मोकळी पैदा ही। मिनखां में मिनख हो अर ही साख-सोभा, खाली ई को होनी।

कैवत में कैवै है—'सोनार बेटी रा ई हांचळ काट लेवै'। पण तेजै ऊपर आ बात लागू का पड़तो हीनी।

जूनी गळी मैं रैंवतो जणै गळीवाळां सूं आछो-भायां जिसो वौपार राखतो। छोटी-मोटी गैणै री टूटत-भागत सुधारतो तौ कंई सं कौडी ई को

लेंवतौ नी। गळी री बाई-बेटी नै आपरी धाई-बेटी मानतौ। कई लुगाई रै सामनै भर निजर जोंवतौ को हौनी। आपरै काम सूं काम। सगळां सूं सेवा-सिलाम। सगळां री काण-कदर सगळां रौ मुलायजौ।

तेजौ पुण्यात्मा हौ।

दिनूगै वैगो उठ'र तेजौ जंगळ में दिसा-फरागत जांवतौ। पछै आय'र दांतण-कुरला अर सिनान करतौ। फेर भगवान रा दोय नांव लेंवतौ। रामजी रै चित्तर रै धूप खेंवतौ। पछै वरसाळी में आय'र राछ-रूछ ठीकसर जचांवतौ—हथोड़ौ, हथोड़ी, कतियौ वडौ-छोटौ, जंभूरौ, सिंडासी, पलास, चूंप्यां, रेती, छीणी, जितरी, कांटी-बाट, चांकी, मूस, पीतळ रौ दियौ, नाळ, रेती भिजोवण री कूंडी, ऐरण, वाळकूंची, अंगेठी-अंगेठी, नवसादर, सुवागौ, तिजाब, पीसियोड़ौ धूलौ, सिंचा-छोटा-बड़ा।

इग्यारस रै दिन कथा सुणतौ। रात नै माळा लेय'र घणी देर तांई राम नाम जपतौ। कूड़-कपट आटै में लूण माफक-दासभाय धरत तौ। सरधा सारू दान-पुन ई करतौ।

तेजौ धरमातमा अर भगत हौ।

तेजै री, पैलड़ी वहू इसी ही जाणै आभैरी बीज, सावण री तीज, चांदै मांय सूं चीरियोड़ी। आंख्यां में इत्ती सरम ही कै कई सूं चौ निजर ई को होंवती नी। गैणा-गांठा पैरियोड़ी साख्यात लिखमी दीखती। गुण ई लिखमी जिसा हा अर हौ नांव ई लिख्मी।

गळी री लुगायां सूं पूरी-पूरी हेत-मेळ राखती।

दोयां री चोखी जोड़ी जची ही। जिठै लिख्मी उठै दाळद री क्या काम? घर हंस तौ हौ। तेजौ, लिखमी नै, गळै रौ हार कर'र राखतौ। क्या मजाल जिकौ कदेई दिर-छिर ई कैय देवै। अछन-अछन करवौ।

- तेजौ, नारी रौ खरौ मोलू-पारखू हौ।

इण लिखमी रै एक बेटी हुई—मोवनी। बाई मां ऊपर गई। कैवत में ई कैवै है—मां जिसी डीकरी घड़ै जिसी ठीकरी।

मोवनी री व्यांव तेजै गाजै-वाजै सूं कियौ। गांव-गांव सूं मोकळा सोनार आया। केई जान मैं, तौ केई मायां मैं। गळी ऊंठां सूं भरीजगी। ऊंठा रै नीरै-चारै रौ बंदोबस्त कियौ। आवणियां रै चिलमिया अर होकै-पाणी री ओपतौ जुगाड़ कियौ। गांवां सूं मिणाबंद घी मंगायौ। आछा-आछा पदारथ-पकवान बणाया। पइसै नै काकरौ कर दियौ।

तेजौ औलीदोलौ हौ।

गळी-गुवाड़वाळा नै हाथ जोड़र भेळा किया। वांरौ घणौ मान-सनमान कियौ। वांई तेजै रै सगां री आपरै सगां दाई खातरी की। तेजै आपरी ठोड बानै ई थरप दिया।

तेजै री बहू-लिखमी गळी री लुगायां नै चाव अर आदर सूं बुलाय लाई। वैरी तरफ सं वां सग्य री खातर की।

तेजो घणौ मेळू अर मीठौ हौ।

पछै लिखमी सरग सिधारगी-बीजी घर मैं घाली। बाई थोड़ी जीवी। मर'र दुख-दगौ देयगी।

हमैं तेजो तीजी लुगाई लायौ। ऊपरडाळै सूं वा घर मैं बड़ी। परणीजियोड़ी ईज सामै मवड़ बड़े। इण रै बूढ़ापै मैं जांयतौ एक छोरौ हुयौ। तेजै रा कंईक आंसू पूछीजिया। पण बेमाता हंसी कैयौ—ऐ आंसं क्या पूंछै है हाल तनै आसूंवा री नदिया वैवावणी है।

तीजी लुगाई 'गूजर' कैयावै, पण परणीजियोड़ी हुवै जिका।

तेजै रौ दिन बदळियौ। लिखमी रै मरणै सूं लिखमी तौ पगै लागणा कर ई गई ही। पैदा ई पोची पड़गी अर पोची ई पड़गी निजर।

बेमाता री गत बेमाता ई जाणै। लाई इसै खरै भलै-मोळै, सीधै-सादै अर धरमातमा मिनख नै छेकड़, रोवाय रिबकाय'र, तरसाय-तड़फाय'र, परलोक भेजण रा करूड़ लेख लिखती वेळा वैरौ काळजौ कांकर, भाठै दाई काठौ हुय ग्यौ ? बाई जाणै।

आज तेजै नै पग पसारियां दोय जुगां सूं ऊंचा हुयग्या। म्हारी गळी रै जिकै घर में पैली पोत बौ रैंवतौ हो बोई पसर ग्यो।

तेजो परलोक पूग ग्यो तो क्या हुवै ? बै रै सरीर रौ छाया चित्तर इयै लोक रै मानवियां रै मांयलै मना में तो हाल तांई इसो रौ इसो मंडियो पड़ियौ है। विचलौ खामणो, गोरौ गट्ट सरीर तीखो नाक, बडौ माथो, टाट पड़ियोड़ी, छीदा दांत, बडी-बडी आंख्यां जिकै ऊपर धौळी डांडयां रौ चसमौ, जाडा भंवारा, लंबी काळी ओपती दाड़ी, माथै फूल गुलाबिया पागड़ी, पैरण नै कसां दार अंगरखी, ऊंची-ऊंची धोतियौ पगां में देसी पगरखी अर हाथ में छड़ी।

जद गळी रा दोय दाना भेळा हुवै, जूनी बातां री चरचा चलै जणै तेजै री बात अबस कर निकळै। जिकै नै सुण'र नवी पीड़ी रै श्रोतावां रै मांय तेजै रै गुणां री खुसबो पसरै अर वे आपरी कल्पना रै सायरै आपरै मांयलै पासी मानखै रै ओपतै-सोवणै चित्तर रा धूंधळा लीख-लीखाटियां खांचण लागै।

ऊमौ दरजी

माथै ऊपर बिदरंगी पागड़ी जिकै मैं जागा-जागा पोयोड़ी सुयां खसोळियोड़ी, आंख्यां ऊपर चांदी री डांड्या री चसमी, लिलाड़ माथै रेख्या लगायोड़ी, तीखा भंवारा, तीखौ नाक, गोरौ रंग, दूबळौ-पतळौ सरीर, दाड़ी रा केस बिखरियोड़ा, छोटी मूंछ, चिपियोड़ा गाल, बगलबंधी पैरियोड़ी, खांधै रेजी रौ गमछौ, हाथ मैं गज अर कतरणी लियां, गोडां साईनी धोती अर देसी पगरखी पैरयां ऊमौ म्हांरी गळी मैं आया करतौ। बौ घणौसीक रतनलालजी बाबैजी रै घरै ठैरिया करतौ। अर इयां गळी मैं सगळां रौ मौळायौ काम धंधौ करतौ।

ऊमौ दरजी हो।

ऊमै री ऊंमर पचासां सूं ऊपर ही पण बत्तीसी खंडत को हुयी होनी। बौ छोटै टाबरां रा खलका, बूढ़ी लुगायां री कसांदार अंगरख्यां, बूढ़ै मिनखां री बगलबंध्या अरचोळा सींया करतौ। सीयाळै मैं रुईदार अंगरखा-अंगरख्यां, रुईदार फतोयां, काना री टोप्यां अर सूंथणा सींया करतौ। बौ जूनै ढंग रा कपड़ा सींवतौ, नवी फैसन रा कपड़ा बैनै सींवणा आंवता को हानी।

रतनलालजी सूं बैरै खूब छणती। खूब घुळ-मिळ'र सतसंग होंवती, बीच-बीच मैं ऊमौ बनानाथजी माराज री बाण्यां रा बोल सुणांवतौ। बाण्यां मैं जोग अर बैराग री बिसे। इण मैं ई दोनां री रुचि ही। पण रतनलालजी भगत ई हा, भागोत ई सुणिया करता।

ऊमौ ई रामदेवजी रौ भगत हो। बाण्यां निरगुण री आछी लागती पण आस्था सगुण मैं ई ही।

जठै जम्मौ दरीज तौ, बाण्यां गाईजती, बठै ऊमौ पूगतौ ईज।

ऊमौ भगत अर सतसंगी हो।

रतनलालजी रै घरै कपड़ा सीवावण रौ काम पड़तौ तौ ऊमौ रूण सूं थोडी दैनगी लेंवतौ-बाई घणी कैवासुणी करणै सूं अर रतनलाल रै जोर देय'र आ बात कैणै ऊपर-'गाय घास सू भायला घालसी तौ खासी कैनै।'

ऊमौ मेळू अर मुलायजैवाळौ हौ।

ऊमै नै गळी-गुवाड़ रा आदमी घणा चांवता हा। खासतौर सूं लुगायां तौ वैसूं घणी राजी रैवती। वौ टाबरां नै राजी राख देंवतौ। सींवाई लेवण मैं थाकौ को फाड़तौ होनी। दैनगी दो पइसा बीजां सूं ओछी लेंवतौ। मोड़ा-वेगा पइसा देंवता तोई झौड़-झपाटौ कदेई को करतौ होनी।

गळी मैं बड़तौ जणै लुगायां थार कर घूम जांवती। काई फाटै गाभै रै टांकौ दरांवती, काई मिनखां री फाटी धोत्यां मैं डांडिया घलांवती। बौ सगळां री वेगार मुलायजै सूं काढ़तौ अर पइसौ ई लेंवतौ को होनी।

ऊमौ खरौ सेवाभावी अर परमारथी हौ।

रुपियै-बारांना री मजूरी बण जावण सूं ऊमौ काम छोड देंवतौ अर ज्ञान री पोथ्यां फुचरण लाग जांवतौ। कणै ई च्यार सतसंग्या नै भेळा कर'र सतसंग छेड़ देंवतौ।

कोई मातमा साधू-संत, पधारता तौ ऊमौ धू चूकै तौ बांरै दरसण नै चूकतौ। आप सं बणती पत्तर-पुसब सूं सेवा करतौ। डीलै बांरी सेवा करतौ, मचका मुट्ठी देंवतौ, गाभा धोय देंवतौ, फाटी चादरां रै टांका लगाय देंवतौ। घठै सतसंग उपदेश अर ज्ञान चरचा होंवती, तौ बौ सगळां सतसंगी भाया नै बांरै घरां सूं बुलाय लांवतौ।

ऊमौ मातमावां मैं घणी श्रद्धा राखतौ हौ।

ऊमै मैं ज्ञान हौ, त्याग हौ, सेवा ही अर-ही परोपगार री भावना। बौ बस पडियां हालती कीड़ी नै ई दखल को देंवतौ नी-वैराग री पासी वैरी घणी रुचि ही।

ऊमै रौ सरीर कायम को रयौनी। पण वैरी सज्जनता अर गुणां री खसबू हाल तांई कायम री कायम है।

पंखैवाळो

पंखैवालो सूं जूनै सनै सू म्हारी गळी मैं आया करतो हो।

ओ कूण हो, क्यों आंवतो हो, इण री एक कथा है। जिकै री संबंध इतिहास सूं है।

कैवै है कै एक वार बादसा औरंगजेब मन मैं इसी धारी कै सगळां रजपूत राजावां नै मुसळमान बणाय दिया जाय। तो पछै बांरी पिरजा सोरी-सोरी मुसळमान बण जासी।

एक खड़जिंतर रचियो गयो। सगळां राजावां, अमीर-उमरावां नै, बादसा अटक नदी रै पार आवण री हुकम भेज दियो। उठै छानी-मानी इसी जड़ाजंत तजवीज जचाय राखी ही कै सगळां नै सागै ई मुसळमान बणाय दिया जावै।

इण गुपत भेद री ठा पड़गी एक जीवणसा फकीर नै।

अटक नदी रै कांठै राजा लोग सुख सूं बैठा गुलछर्रा उडाय रया हा। हा-हा-फी-फी हुय रयी ही ही।

जीवणसा फकीर काळी कांबळ ओढियोड़ो छानो-लुकतो बठै आयो अर सगळां नै सावचेत कर'र कैयो–थे तो अठै गाफल बैठा हो। काल थानै अटक नदी पार करनी है। थांरै बै पार पूगतां ई बादसा सलामत थां सगळां नै एक सागै ई मुसळमान बणाय देसी। हूं थानै सावचेत करण नै आयो हूं। संभळो-संभो अर इण आफत सूं बंचण री बेगो उपाव काढ़ो।

फकीर तो कैय'र फरै। सगळां रा चैरा फक्क। दुगदुग एक बीजै रो मूंडो जोवै। गळै-घांटै नहीं आवै। कूण पाड़ सूं माथो टकरावै? कूण काळै नै धूड़ घावै? कूण चलाय'र मौत नै तेड़ो जावै? कूण ब्रिन आई मरै। कूण स्याम सूं संग्राम मांडै।

जणै बीकानेर नरेस श्री करणसिंहजी नै इस्ट देवता री प्रेरणा हुई। बोलिया-मनै एक उपाव उखतियो है। इयां करो। बादसा री परखै नै कैवो-पैला राजा लोग वै पार जासी। आ बात वे मरियां ई को माननी। वां री सान ओछी को हुय जावैनी? वे आपां सूं पैला बयीर हुय जासी। वानै पूगाय'र जद नावां आपांनै लेवण नै पाछी आवै तद वांरा टुकडा उडाय दो। पाछा दुर पड़ो आपां रै देस। कद नदी नांघा बणै अर कद बैपारवाळा, पाछा आवै? जित्तै देख दाता है, फेर काई सोचसां।

बात तो सगळां रै हाडो-हाड बैठगी। पण आगीवान बणै कुण? जद श्री करणसिंहजी हांकारो भरियो।

धूड़ री तखत बणियो। सगळै राजा मिसल-सर ऊभा। वानै बादसा थरपिया। जोर-जोर सूं वां री जै बोलाई। अर वानै 'जय जंगळ घर बादसा, री पदवी देय'र वांरो पूजन, सनमान कियो।

पण जीवणसा फकीर रै उपगार री बदळो चूकावणो हाल बाकी ई रैयग्यो। जणै सगळां मिळ'र रजवाडां मैं घर-घर सूं एक-एक पइसो उघरावण री बैनै पट्टो लिख दियो।

उणी जीवण सा फकीर रै परवारवाळा राजाआं रै बखत तांई बराबर उघराई करता हा। आपरै खनै मोरपांख री पंखो राखण सूं 'पखैवाळा' कैवाया।

तो म्हांरी गळी मैं फकीर अबदुल-रैमान सा आया करता। अरबी-फारसी रा वे आछा विदवान हा। बिचलो खामणो, भारी सरीर, बडी बडी आंख्यां, जाडा भंवारा, मैंदो सूं रंगियोड़ा केस अर दाढ़ी, कमेज पैरियोडो, तैमल बांधियोड़ी, माथै मलागिरी फैंटो, पगां मैं पंजाबी पगरखी, एक हाथ मैं पंखो अर बीजै मैं छड़ी। घर सामै ऊभ'र करारी घोरदार आवाज लगांवता— हरदम चेत, लाखों माई एक पैसा।' गळीवाळा, वांरो घणो आदर करता। टाबर वानै देखण नै भेळा हुय जांवता। कई घरां तांई वां रै सागै-सागै जांवता। लारै सूं वांरी नकल कढ़ांवता।

लारलै दिनां मैं, साजी रै गळै मैं खराबी हुयगी ही। बोली बैठगी। धाघी पड़गी ही।

साजी नै कोई पइसौ नहीं देंवतो तौ वे दावौ कर'र ले सकता हा। एक वार इसी ई वारदात सायत चूरू या रतनगढ़ मैं हुई ही, इसी सुणनै मैं आई है।

पछै इण रै वदळै में राज सूं १००) महीनौ साजी रौ बंध ग्यौ हो।

मोकळा वरस इयै वात नै हुयग्या पण हाल तांई साजी नै लोग भूलिया कोयनी।